सविधि

श्री बाला-खड्ग माला

सविधि

श्री बाला-खड्ग-माला

सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक

शाक्त-साधना-पीठ

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, इलाहाबाद—२११००६

अ - नु - क्र - म

प्राक्कथन

लगभग १६ वर्ष पूर्व भगवती श्रीविद्या (श्रीललिता त्रिपुर-सुन्दरी) की 'खड्ग-माला' का विधान सौभाग्य से मेरे हाथ आया और साधकों के लिये उसे उपयोगी समझकर मैंने हिन्दी-टीका सहित लिख डाला। उसके प्रकाशित होने पर 'श्रीविद्यो-पासकों' ने उसे बड़ी प्रसन्नता से अपना लिया। उसका दूसरा संस्करण परिवर्धित रूप में सं० २०३६ में प्रकाशित किया गया। इस द्वितीय संस्करण के लिए 'खड्ग-माला' की महिमा और उसके अनुसार साधना करने से मिलने-वाले फल को हिन्दी में लिखते समय मन में विचार उठा कि इस माला की विधि तो अन्य महा-विद्याओं के उपासकों के लिए भी बड़ी कल्याण-कारिणी है, क्यों न इसी आधार पर उनका भी खड्ग-माला-विधान तैयार कर प्रकाशित किया जाय।

'सविधि श्री श्रीविद्या खड्ग-माला' नामक पुस्तक के प्रका-शित होने के बाद उसका पारायण करते समय कुछ ऐसी प्रेरणा हुई कि पञ्चदशी के पूर्व श्रीविद्या के साधकों को भगवती श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी की 'खड्ग-माला' का पारायण कर लेना कल्याणकारी सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त जो साधक भगवती श्री बाला की ही उपासना करते हैं, उनके लिए तो 'श्रीबाला-खड्ग-माला' का विधान एक अनिवार्य आवश्यकता जान पड़ी। फलतः प्रस्तुत पुस्तिका का लेखन प्रारम्भ हुआ और श्रीगुरु-कृपा से अनतिकाल में ही इसकी पाण्डु-लिपि प्रस्तुत हो गई।

'शाक्त-साधना-पीठ' के ज्येष्ठ साधक-प्रवर श्रीबालानन्द-नाथ जी ने सर्व-प्रथम हस्त-लिखित रूप में ही इसका पारायण

प्रारम्भ किया और इससे उन्हें विशेष कल्याण की अनुभूति हुई। अतः निश्चय किया गया कि अन्य उपासकों को भी इसे सुलभ कराया जाय। इस प्रकार 'सविधि श्रीबाला खड्ग-माला' का यह संस्करण पहले पहल पुस्तक-रूप में साधकों के कर-कमलों में सादर समर्पित है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सामान्यतः दीक्षाभिषेक प्राप्त बन्धुवर मूल-मन्त्र का ऋष्यादि-न्यासपूर्वक ध्यान-मानस-पूजन-जपादि ही नित्य कर पाते हैं। आवरण-पूजन करने का अवसर कुछ ही भाग्यशाली साधकों को मिलता है क्योंकि उसका विधान 'चक्र-पूजा' या 'चक्रार्चन' (निशा-पूजा, महा-पूजा, रहस्य-पूजा) के ही अन्तर्गत निहित है। यह 'चक्र - पूजा' समय, अभ्यास और साधनों के अभाव में सामान्य साधक नहीं कर पाते। ऐसी दशा में आवरण-देवताओं से वे प्रायः अपरिचित ही रह जाते हैं।

आवरण-देवताओं से परिचित हुये विना जो भी साधना की जाती है, वह अपूर्ण ही रहती है। 'खड्ग - माला' विधान की यह विशेषता है कि इसके नित्य पारायण से अल्प समय में ही बिना विशेष साधनों के ही प्रत्येक सामान्य साधक भी अपने-अपने इष्ट - देवता से सम्बन्धित आवरण-देवताओं का स्मरण और पूजन विधि-वत् कर सकता है। इस पारायण में समय भी बहुत कम लगता है—प्रतिदिन प्रायः मात्र २० मिनट।

यह अवश्य है कि प्रायः सभी विद्याओं से सम्बन्धित 'खड्ग-माला' स्तोत्र उपलब्ध हैं किन्तु जैसा विस्तृत और सहज विधान भगवती श्रीविद्या के सम्बन्ध में साधकों को सुलभ रहा है, वैसा विधान अन्य महा-देवियों के उपासकों को प्राप्त नहीं हो सका है।

दश महा-विद्याओं में से तृतीया महा-विद्या भगवती षोडशी के मुख्यतः तीन स्वरूप हैं—१ भगवती श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी (त्र्यक्षरी), २ भगवती श्रीललिता त्रिपुर-सुन्दरी (त्रिकूटा) और ३ भगवती श्रीषोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी (षोडशाक्षरी)। इन तीन स्वरूपों में से आदि स्वरूप का अपना विशेष महत्व है। श्रीबाला-गर्भित साधना ही श्रीकुल के साधकों को वाञ्छित फल प्रदान कर सकती है। इस तथ्य से स्पष्ट है कि 'सविधि श्रीबाला खड्ग-माला' का कितना महत्व है। इस 'माला' की महिमा और भी बढ़ जाती है, जब कि यह ज्ञात होता है कि अनेक साधक इसे अपना कर इसकी आशु फल-दायिनी शक्ति का अनुभव भी कर चुके हैं।

प्रस्तुत पुस्तक द्वारा भगवती श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी के उपासक बन्धुओं को 'खड्ग-माला' का यह कल्याणकारी विधान उपलब्ध हो रहा है, यह भगवती एवं श्रीगुरुदेव की विशेष कृपा से ही सम्भव हो सका है। उसी कृपा के भरोसे भगवती काली, तारा, भुवनेश्वरी, कमला आदि महा-विद्याओं से सम्बन्वित 'खड्ग-माला-विधान' को भी प्रस्तुत और प्रकाशित करने का हमारा विचार है।

'सविधि श्रीबाला खड्ग-माला' के प्रस्तुतिकरण में, सम्भव है, लेखक के प्रमाद-वश कहीं कोई त्रुटि रह गई हो, उसके लिए गुरु-जनों से प्रार्थना है कि उसके सम्बन्ध में हमें सूचित करने की कृपा करेंगे, जिसे सधन्यवाद अगले संस्करण में दूर कर दिया जायगा।

'खड्ग-माला' का विशेष परिचय और माहात्म्य तथा इसमें आए ध्यानों का हिन्दी अर्थ 'सविधि श्रीविद्या खड्ग-माला' में

प्रकाशित है। जो बन्धु चाहें, उसे उसमें देख सकते हैं। स्थानाभाव के कारण उस सबको इस पुस्तक में प्रकाशित नहीं किया गया है। यहाँ संक्षेप में इस माला की फल-श्रुति के कुछ अंश देना उचित होगा। यथा—

१ प्रतिदिन एक वार पन्द्रहों माला का जप करनेवाला साधक सब पापों से मुक्त होकर सभी प्रकार के पुण्य प्राप्त करता है।

२ एक महीने तक इस उत्तम माला का जप करने से असाध्य रोग से छुटकारा मिलता है।

३ माला-मन्त्रों से अभिमन्त्रित जल या भस्म को भूताविष्ट व्यक्ति के मस्तक पर लगाने से या इस 'माला' के साधक के हाथ के स्पर्श मात्र से प्रेत-बाधा दूर होती है, ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति का ज्वर दूर होता है, वात-व्याधि वाले का वायु-रोग नष्ट हो जाता है।

४ पन्द्रहों मालाओं के मन्त्रों से अभिमन्त्रित घटोदक (घड़े में रखे जल) को नित्य सात दिन तक पीने से वन्ध्या स्त्री को भी सन्तान की प्राप्ति होती है।

५ इन पन्द्रह मालाओं के जप के फल-स्वरूप जप-कर्ता का स्वरूप दिव्य पुण्य-मय बन जाता है और उसके शरीर से प्रज्वलित अग्नि जैसा तेज निकलने लगता है, जिसे देखकर भूत-प्रेतादि डरकर भाग खड़े होते हैं।

हमें विश्वास है कि प्रतिदिन इस 'माला' का पारायण करने से भगवती श्री बाला के उपासकों को विशेष आनन्दानुभूति का लाभ होगा। इसी में हमारे इस प्रयास की सार्थकता है।

पौष पूर्णिमा, २०४४ —'कुलभूषण'

श्रीशक्ति-सम्बुद्धयन्त-माला

शुक्ल-पक्ष की	कृष्ण-पक्ष की
प्रतिपदा को	अमावास्या को

पहले निम्न प्रकार सङ्कल्प करे। 'अमुक' के स्थान पर प्रदेश, क्षेत्र, सम्वत्सर, मासादि का नामोल्लेख करना चाहिये—

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरण अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति-सम्बुद्धयन्त-माला-मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि - वरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। खड्ग - सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि - वरुणादित्य-ऋषये नमः शिरसि । गायत्री-छन्दसे नमः मुखे । श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी-देवतायै नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः नाभौ । सौः कीलकाय नमः पादयोः । खड्ग-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप - वटीका पुस्तिकाभीति-हस्ता ।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याण-शीला ॥

मानस पूजा—

१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता - श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो - मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे । यथा—

ताद‍ृशं खड्गमाप्नोति येन हस्त-स्थितेन वै ।
अष्टादश-महा-द्वीप-साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति ॥

इस माला में आवरण-देवताओं के प्रत्येक सम्बुद्धयन्त नाम के पूर्व 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' जोड़कर जप करना चाहिए। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमश्श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि ॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणि प्रकाशानन्दनाथ-मयि परमेशानन्द-नाथ-मयि पर-शिवानन्द-नाथ-मयि कामेश्वरानन्द-नाथ-मयि मोक्षानन्द-नाथ-मयि कामानन्द-नाथ-मय्यमृतानन्द-नाथ-मयि ॥ सिद्धौघ-गुरु-रूपिणीशानानन्द-नाथ-मयि तत्पुरुषानन्द-नाथ-मय्यघोरानन्द-नाथ-मयि वामदेवानन्द-नाथ-मयि सद्योजातानन्द - नाथ-मयि ॥ मानवौघ-गुरु - रूपिणि गगनानन्द-नाथ मयि विश्वानन्द-नाथ-मयि विमलानन्द-नाथ-मयि मदनानन्द-नाथ-मय्यात्मा-नन्द-नाथ-मयि प्रियानन्द-नाथ-मयि ॥ गुरु-चतुष्टय - रूपिणि श्री-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मयि श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द - नाथ - मयि श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्दनाथ-मयि श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि ॥ रते प्रीते मनो-भवे ॥

हृच्छक्ति-देवि शिरः-शक्ति-देवि शिखा-शक्ति-देवि कवच-शक्ति-देवि नेत्र-शक्ति-देव्यस्त्र-शक्ति-देवि ॥

मनोभव-मयि मकरध्वज-मयि कन्दर्प-मयि मन्मथ-मयि कामदेव-मयि ॥

द्राविणि क्षोभिण्याकर्षिणि वशीकरिणि सम्मोहिनि ।।

सुभगे भगे भग-सर्पिणि भग - मालेऽनङ्गेऽनङ्ग-कुसुमेऽनङ्ग-मेखलेऽनङ्ग-मदने ।।

ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहीन्द्राणि चामुण्डे महालक्ष्म्य—।।

—सिताङ्ग-भैरव-मयि रुरु-भैरव-मयि चण्ड-भैरव-मयि क्रोध-भैरव - मय्युन्मत्त-भैरव-मयि कपालि-भैरव-मयि भीषण-भैरव-मयि संहार-भैरव-मयि ।।

कामरूप-पीठ मयि मलय-पीठ - मयि कुल-नाग-पीठ-मयि कुलान्त-पीठ-मयि चौहार-पीठ-मयि जालन्धर-पीठ-मय्युड्यान-पीठ-मयि देवी-कोट-पीठ-मयि ।।

हेतुक-मयि त्रिपुरान्तक - मयि वेताल - मय्यग्नि-जिह्व-मयि कालान्तक-मयि कपाल-मय्येक-पाद-मयि भीम-रूप-मयि मलय-मयि हाटकेश्वर-मयी—।।

—न्द्र-मय्यग्नि-मयि यम-मयि निऋति - मयि वरुण-मयि वायु-मयि कुबेर-मयीशान - मयि ब्रह्मा-मय्यनन्त-मयि ।।

वज्र-मयि शक्ति-मयि दण्ड-मयि खड्ग-मयि पाश-मय्यंकुश - मयि गदा - मयि त्रिशूल - मयि पद्म-मयि चक्र-मयि ।।

वटुक-मयि योगिनी-मयि क्षेत्रपाल-मयि गणेश-मयि वसु-मयि सूर्य-मयि शिव-मयि भूत-मयि ।।

श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।।

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
त्वत्-प्रसादान्मे देवि ! सिद्धिर्भवतु महेश्वरि ।।

++
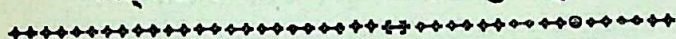
☒ यह 'सम्बुद्ध्यन्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में सम्बोधन (आवाहन) की विभक्ति है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस 'मन्त्र में निर्दिष्ट देवता का मैं आवाहन कर रहा हूँ', यह भावना मन में करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति सम्बोधन पर उस देवता के प्रति हाथ जोड़ता जाय।
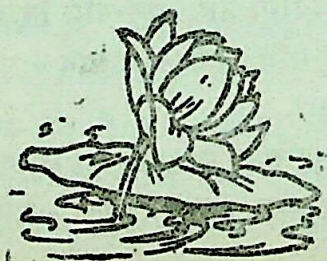
श्रीशक्ति-नमोऽन्त-माला

द्वितीया
शुक्ल-पक्ष

चतुर्दशी
कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि - युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक - पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक - गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्री-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति-नमोऽन्त - माला-मन्त्रस्य पार्थिवेन्द्रियाधिष्ठायि - मित्रादित्य ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। पादुका-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—पार्थिवेन्द्रियाधिष्ठायि-मित्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः नाभौ । सौः कीलकाय नमः पादयोः । पादुका-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—

रक्ताम्बरां चन्द्र - कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम् ।
विद्याक्ष-मालाभय - दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि' —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि' —ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे। यथा—

ताद‍ृशं पादुका-युग्मसाप्नोति तव भक्ति-मान्।
यदाक्रमण-मात्रेण क्षणात् त्रिभुवन - क्रमः॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'नमः पादुकाभ्यां पूजयामि' जोड़कर जप करना चाहिए। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामि॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिण्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामि प्रकाशानन्द-नाथ-मय्यै० परमेशानन्द-नाथ-मय्यै० पर-शिवानन्द-नाथ-मय्यै० कामेश्वरानन्द - नाथ - मय्यै० मोक्षानन्द-नाथ-मय्यै० कामानन्द-नाथ-मय्यै नमः पादु-काभ्यां पूजयाम्यमृतानन्द-नाथ-मय्यै० । सिद्धौघ-गुरु-रूपिण्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामीशानानन्द-नाथ-मय्यै० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मय्यै पादुकाभ्यां पूजयाम्यघोरा-नन्द-नाथ-मय्यै० वामदेवानन्द-नाथ-मय्यै० सद्योजातानन्द-नाथ-मय्यै० । मानवौघ-गुरु-रूपिण्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामि गगनानन्द-नाथ-मय्यै० विश्वानन्द-नाथ-मय्यै० विमलानन्द-नाथ - मय्यै० मदनानन्द-नाथ-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यात्मानन्द-नाथ-मय्यै० प्रियानन्द-नाथ-मय्यै० । गुरु-चतुष्टय-रूपिण्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामि श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० । रत्यै० प्रीत्यै० मनो-भवायै० ॥

हृच्छक्ति-देव्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामि शिरः-शक्ति-देव्यै० शिखा-शक्ति-देव्यै० कवच - शक्ति-देव्यै० नेत्र-शक्ति - देव्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यस्त्र-शक्ति-देव्यै० ॥

मनोभव-मय्यै० मकर-ध्वज-मय्यै० कन्दर्प-मय्यै० मन्मथ-मय्यै० कामदेव-मय्यै० ।।

द्राविण्यै० क्षोभिण्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्या-कर्षिण्यै० वशीकरिण्यै० सम्मोहिन्यै० ।।

सुभगायै० भगायै० भग-सर्पिण्यै० भग - मालायै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यनङ्गायै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यनङ्ग - कुसुमायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलायै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यनङ्ग-मदनायै० ।।

ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामीन्द्राण्यै० चामुण्डायै० महा-लक्ष्म्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्य—।।

—सिताङ्ग-भैरव-मय्यै० रुरु-भैरव-मय्यै० चण्ड-भैरव-मय्यै० क्रोध-भैरव-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूज-याम्युन्मत्त-भैरव-मय्यै० कपालि-भैरव-मय्यै० भीषण-भैरव-मय्यै० संहार-भैरव-मय्यै० ।।

कामरूप-पीठ-मय्यै० मलय-पीठ-मय्यै० कुल-नाग-पीठ-मय्यै० कुलान्त-पीठ - मय्यै० चौहार-पीठ-मय्यै० जालन्धर-पीठ-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्युड्डयान-पीठ-मय्यै० देवी-कोट-पीठ-मय्यै० ।।

हेतुक-मय्यै० त्रिपुरान्तक-मय्यै० वेताल-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यग्नि-जिह्व-मय्यै० कालान्तक-मय्यै०

कपाल-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्येक-पाद-मय्यै० भीम-रूप-मय्यै० मलय - मय्यै० हाटकेश्वर-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामी—॥

—न्द्र-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यग्नि-मय्यै० यम-मय्यै० निऋति-मय्यै० वरुण-मय्यै० वायु-मय्यै० कुबेर-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयामीशान-मय्यै० ब्रह्मा-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजयाम्यनन्त-मय्यै०॥

वज्र-मय्यै० शक्ति-मय्यै० दण्ड-मय्यै० खड्ग-मय्यै० पाश-मय्यै नमः पादुकाभ्यां पूजमाम्यंकुश-मय्यै० गदा-मय्यै० त्रिशूल-मय्यै० पद्म-मय्यै० चक्र-मय्यै० ॥

वटुक-मय्यै० योगिनी-मय्यै० क्षेत्रपाल-मय्यै० गणेश-मय्यै० वसु-मय्यै० सूर्य-मय्यै० शिव-मय्यै०, भूत-मय्यै० ॥

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
त्वत्-प्रसादान्मे देवि ! सिद्धिर्भवतु महेश्वरि ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥

※ यह 'नमोऽन्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवताओं के चरणों में मन-ही-मन नमस्कार की भावना करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति 'नमः पादुकाभ्यां पूजयामि' पर गन्ध-पुष्पाक्षत या पुष्पांजलि चढ़ावे।

श्रीशक्ति-स्वाहान्त-माला

तृतीया	त्रयोदशी
शुक्ल-पक्ष	कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य - क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति - स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायि - धात्रादित्य ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अञ्जन-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—पादेन्द्रियाधिष्ठायि - धात्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप-छन्दसे नमः मुखे। श्री-कामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-देव-

तायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अञ्जन-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरा चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाभय-दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'-अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे। यथा—

सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनांजनित-लोचनः।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान्॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'स्वाहा' जोड़कर जप करना चाहिये। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिण्यै स्वाहा प्रकाशानन्द - नाथ-मय्यै० परमेशानन्द-नाथ-मय्यै० पर-शिवानन्द-नाथ-मय्यै० कामेश्वरानन्द-नाथ-मय्यै० मोक्षानन्द - नाथ-मय्यै० कामानन्द-नाथ - मय्यै स्वाहाऽमृतानंद - नाथ-मय्यै० । सिद्धौघ-गुरु-रूपिण्यै स्वाहा ईशानानंद - नाथ-मय्यै० तत्पुरुषानंद-नाथ-मय्यै स्वाहाऽघोरानंद-नाथ-मय्यै० वाम-देवानंद-नाथ-मय्यै० सद्योजातानंद-नाथ-मय्यै० । मानवौघ-गुरु-रूपिण्यै स्वाहा गगनानंद-नाथ-मय्यै० विश्वानंद-नाथ-मय्यै विमलानन्द-नाथ-मय्यै० मदनानन्द-नाथ-मय्यै स्वाहाऽऽत्मानंद - नाथ - मय्यै० प्रियानंद-नाथ-मय्यै० । गुरु - चतुष्टय-रूपिण्यै स्वाहा श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरम-गुरु-अमुकानंद-नाथ-मय्यै० श्रीपरात्पर-गुरु - अमुकानंद - नाथ-मय्यै० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानंद-नाथ-मय्यै० । रत्यै० प्रीत्यै० मनो-भवायै० ।।

हृच्छक्ति - देव्यै स्वाहा शिरः-शक्ति-देव्यै० शिखा-शक्ति-देव्यै० कवच-शक्ति-देव्यै० नेत्र-शक्ति-देव्यै स्वाहा-ऽस्त्र-शक्ति-देव्यै० ।।

मनोभव-मय्यै० मकरध्वज-मय्यै० कन्दर्प-मय्यै० मन्मथ-मय्यै० कामदेव-मय्यै० ।।

द्राविण्यै० क्षोभिण्यै स्वाहाऽऽकर्षिण्यै० वशीकरिण्यै० सम्मोहिन्यै० ॥

सुभगायै० भगायै० भग-सर्पिण्यै० भग - मालायै स्वाहाऽऽनङ्गायै स्वाहाऽनङ्ग - कुसुमायै स्वाहाऽनङ्ग-मेखलायै स्वाहाऽनङ्ग-मदनायै० ॥

ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै स्वाहा इन्द्राण्यै० चामुण्डायै० महा-लक्ष्म्यै स्वाहा—॥

—ऽसिताङ्ग-भैरव-मय्यै० रुरु-भैरव-मय्यै० चण्ड-भैरव-मय्यै० क्रोध-भैरव-मय्यै स्वाहा उन्मत्त-भैरव-मय्यै० कपालि-भैरव-मय्यै० भीषण - भैरव - मय्यै० संहार-भैरव-मय्यै० ॥

कामरूप-पीठ-मय्यै० मलय-पीठ-मय्यै० कुल-नाग-पीठ-मय्यै० कुलान्त-पीठ - मय्यै० चौहार-पीठ-मय्यै० जालन्धर-पीठ-मय्यै स्वाहा उड्डयान-पीठ-मय्यै० देवी-कोट-पीठ-मय्यै० ॥

हेतुक-मय्यै० त्रिपुरान्तक - मय्यै० वेताल - मय्यै स्वाहाऽग्नि-जिह्व-मय्यै० कालान्तक-मय्यै० कपाल-मय्यै स्वाहा एक-पाद-मय्यै० भीम-रूप-मय्यै० मलय-मय्यै० हाटकेश्वर-मय्यै० ॥

इन्द्र-मय्यै स्वाहाऽग्नि-मय्यै० यम - मय्यै० निऋति-मय्यै० वरुण-मय्यै० वायु-मय्यै० कुबेर-मय्यै स्वाहा ईशान-मय्यै० ब्रह्मा-मय्यै स्वाहाऽनन्त-मय्यै०॥

वज्र-मय्यै० शक्ति-मय्यै० दण्ड-मय्यै० खड्ग-मय्यै० पाश-मय्यै स्वाहांऽकुश-मय्यै० गदा-मय्यै० त्रिशूल-मय्यै० पद्म-मय्यै० चक्र-मय्यै० ॥

वटुक-मय्यै० योगिनी-मय्यै० क्षेत्रपाल-मय्यै० गणेश-मय्यै० वसु-मय्यै० सूर्य-मय्यै० शिव-मय्यै०, भूत-मय्यै० ॥

जप-समर्पण—

ॐगुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ☸

☸ यह 'स्वाहान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवताओं के प्रति चित्-कुण्ड में हवन की भावना करता जाय। बाह्य पूजन में प्रति 'स्वाहा' पर हवन-कुण्ड में घृत की आहुतियां देता जाय।

(४)

श्रीशक्ति-तर्पणान्त-माला

चतुर्थी — द्वादशी
शुक्ल-पक्ष — कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत् । अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य - क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति - तर्पणान्त-माला-मन्त्रस्य पाणीन्द्रयाधिष्ठायि - अर्यमादित्य ऋषिः । वृहती छन्दः । श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । क्लीं शक्तिः । सौः कीलकं । बिल-सिद्धौ जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—पाणीन्द्रयाधिष्ठायि-अर्यमादित्य-ऋषये नमः शिरसि । वृहती - छन्दसे नमः मुखे । श्री-कामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-देव-

तायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। बिल-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाभय-दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे। यथा—

बिल - द्वारम ावृत्य पाताल - तल - योगिनः।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्ध-सिद्धस्तव भक्तः सुखी भवेत् ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'तर्पयामि' जोड़कर जप करना चाहिये। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि ।।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणीं० प्रकाशानन्दनाथ-मयीं० पर-मेशानन्द-नाथ-मयीं० पर - शिवानन्द - नाथ - मयीं० कामेश्वरानन्द-नाथ-मयीं० मोक्षानन्द - नाथ - मयीं० कामानन्दनाथ-मयीं तर्पयाम्यमृतानन्द-नाथ-मयीं० ॥ सिद्धौघ-गुरु - रूपिणीं तर्पयामीशाना-नन्द-नाथ-मयीं० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मयीं तर्पयास्यघोरा-नन्द-नाथ-मयीं० वामदेवानन्द - नाथ - मयीं० सद्योजाता - नन्द - नाथ-मयीं० ॥ मानवौघ - गुरु - रूपिणीं० गगनानन्द - नाथ-मयीं० विश्वानन्दनाथ-मयीं० विमलानन्द-नाथ-मयीं० मदनानन्द - नाथ - मयीं तर्पयाम्यात्मा - नन्द - नाथ-मयीं० प्रियानन्द-नाथ-मयीं० ॥ गुरु-चतुष्टय-रूपिणीं० श्री - गुरु - अमुकानन्द - नाथ - मयीं० श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयीं० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्दनाथ-मयीं० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयीं० ॥ रतिं० प्रीतिं० मनो-भवां० ॥

हृच्छक्ति-देवीं० शिरः-शक्ति-देवीं० शिखा-शक्ति-देवीं० कवच-शक्ति-देवीं० नेत्र-शक्ति-देवीं तर्पयाम्यस्त्र-शक्ति-देवीं० ॥

मनोभव-मयीं० मकरध्वज-मयीं० कन्दर्प-मयीं० मन्मथ-मयीं० कामदेव-मयीं० ॥

द्राविणीं० क्षोभिणीं तर्पयाम्याकर्षिणीं० वशीकरिणीं० सम्मोहिनीं० ॥

सुभगां० भगां० भग-सर्पिणीं० भग-मालां तर्पयाम्यनङ्गां तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमां तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनां० ॥

ब्राह्मीं० माहेश्वरीं० कौमारीं० वैष्णवीं० वाराहीं तर्पयामीन्द्राणीं० चामुण्डां० महालक्ष्मीं तर्पयाम्य—॥

—सिताङ्ग-भैरव-मयीं० रुरु-भैरव-मयीं० चण्ड-भैरव-मयीं० क्रोध-भैरव-मयीं तर्पयाम्युन्मत्त-भैरव-मयीं० कपालि-भैरव-मयीं० भीषण-भैरव-मयीं० संहार-भैरव-मयीं० ॥

कामरूप-पीठ-मयीं० मलय-पीठ-मयीं० कुल-नाग-पीठ-मयीं० कुलान्त-पीठ-मयीं० चौहार - पीठ - मयीं० जालन्धर-पीठ-मयीं तर्पयाम्युड्डयान-पीठ-मयीं० देवी-कोट-पीठ-मयीं० ॥

हेतुक - मयीं० त्रिपुरान्तक - मयीं० वेताल-मयीं तर्पयाम्यग्नि-जिह्व - मयीं० कालान्तक - मयीं० कपाल-मयीं तर्पयाम्येक-पाद-मयीं० भीम-रूप - मयीं० मलय-मयीं० हाटकेश्वर-मयीं तर्पयामी—॥

—न्द्र - मयीं तर्पयाम्यग्नि-मयीं० यम - मयीं० निऋति - मयीं० वरुण - मयीं० वायु - मयीं० कुबेर-मयीं तर्पयामीशान-मयीं० ब्रह्मा - मयीं तर्पयाम्यनन्त-मयीं० ॥

वज्र - मयीं० शक्ति - मयीं० दण्ड - मयीं० खड्ग-मयीं० पाश - मयीं तर्पयाम्यंकुश - मयीं० गदा - मयीं० त्रिशूल-मयीं० पद्म-मयीं० चक्र-मयीं० ॥

वटुक-मयीं० योगिनी-मयीं० क्षेत्रपाल-मयीं० गणेश-मयीं० वसु-मयीं० सूर्य-मयीं० शिव-मयीं० भूत-मयीं० ॥

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥

श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ❀

❀ यह 'तर्पणान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'तर्पयामि' है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति तर्पण की भावना मन में करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति 'तर्पयामि' पर जिह्वाग्र-स्थित कुल-कुण्डलिनी को अमृत का तर्पण कराता जाय।
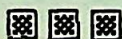
(५)

श्रीशक्ति-जयान्त-माला

पञ्चमी | एकादशी
शुक्ल-पक्ष | कृष्ण-पक्ष

पहले निम्न प्रकार सङ्कल्प करे। 'अमुक' के स्थान पर प्रदेश, क्षेत्र, सम्वत्सर, मासादि का नामोल्लेख करना चाहिये—

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति - जयान्त - माला-मन्त्रस्य वागिन्द्रियाधिष्ठायि-अंशु-मदादित्य ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीकामेश्वर - शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। वाक् - सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—वागिन्द्रियाधिष्ठायि-अंशु-मदादित्य-ऋषये नमः शिरसि। पंक्ति-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी-देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। वाक्-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप - वटीका पुस्तिकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याण-शीला॥

मानस पूजा—

१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता - श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो - मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे । यथा—

वाक्-सिद्धिर्द्विविधा प्रोक्ता शापानुग्रह-कारिणी ।
महा-कवित्व-रूपा च भक्तस्तेन द्वयास्पदः ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'जय जय' जोड़कर जप करना चाहिए । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि जय जय ।।

दिव्यौघ-गुरु - रूपिणि० प्रकाशानन्द-नाथ-मयि० परमेशानन्द-नाथ - मयि० पर - शिवानन्द-नाथ-मयि० कामेश्वरानन्द - नाथ - मयि० मोक्षानन्द-नाथ-मयि० कामानन्द-नाथ-मयि जय जयामृतानन्द-नाथ-मयि० । सिद्धौघ-गुरु - रूपिणि जय जयीशानानन्द-नाथ-मयि० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मयि जय जयाघोरा-नन्द-नाथ-मयि० वामदेवानन्द-नाथ-मयि० सद्योजातानन्द-नाथ-मयि० । मानवौघ - गुरु - रूपिणि० गगनानन्द - नाथ - मयि० विश्वानन्द-नाथ - मयि० विमलानन्द - नाथ - मयि० मदनानन्द-नाथ-मयि जय जयात्मानन्द-नाथ - मयि० प्रियानन्द-नाथ-मयि० । गुरु-चतुष्टय-रूपिणि० श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि० श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि० श्रीपरात्पर - गुरु - अमुकानन्द - नाथ - मयि० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि० । रते० प्रीते० मनो-भवे० ।।

हृच्छक्ति-देवि० शिरः-शक्ति-देवि० शिखा-शक्ति-देवि० कवच - शक्ति - देवि० नेत्र - शक्ति - देवि जय जयास्त्र-शक्ति-देवि० ।।

मनोभव-मयि० मकरध्वज-मयि० कन्दर्प-मयि० मन्मथ-मयि० कामदेव-मयि० ।।

द्राविणि० क्षोभिणि जय जयाकर्षिणि० वशी-करिणि० सम्मोहिनि० ।।

सुभगे० भगे० भग-सर्पिणि० भग-माले जय जया-नङ्गे जय जयानङ्ग-कुसुमे जय जयानङ्ग-मेखले जय जयानङ्ग-मदने० ।।

ब्राह्मि० माहेश्वरि० कौमारि० वैष्णवि० वाराहि जय जयेन्द्राणि० चामुण्डे० महा-लक्ष्मि जय जया—।।

—सिताङ्ग-भैरव-मयि० रुरु-भैरव-मयि० चण्ड-भैरव-मयि० क्रोध-भैरव-मयि जय जयोन्मत्त-भैरव-मयि० कपालि-भैरव-मयि० भीषण-भैरव-मयि० संहार-भैरव-मयि० ।।

कामरूप-पीठ-मयि० मलय-पीठ-मयि० कुल-नाग-पीठ-मयि० कुलान्त-पीठ-मयि० चौहार-पीठ-मयि० जालन्धर-पीठ-मयि० जय जयोड्डयान-पीठ-मयि० देवी-कोट-पीठ-मयि० ।।

हेतुक-मयि० त्रिपुरान्तक-मयि० वेताल-मयि जय जयाग्नि-जिह्व-मयि० कालान्तक-मयि० कपाल-मयि जय

जयैक-पाद मयि० भीम-रूप-मयि० मलय-मयि० हाट-केश्वर-मयि जय जये—।।

—न्द्र-मयि जय जयाग्नि-मयि० यम-मयि० निऋति-मयि० वरुण-मयि० वायु-मयि० कुबेर-मयि जय जये-शान-मयि० ब्रह्मा-मयि जय जयानन्त-मयि० ।।

वज्र-मयि० शक्ति-मयि० दण्ड-मयि० खड्ग-मयि० पाश-मयि जय जयांकुश-मयि० गदा-मयि० त्रिशूल-मयि० पद्म-मयि० चक्र-मयि० ।।

बटुक-मयि० योगिनी-मयि० क्षेत्रपाल-मयि० गणेश-मयि० वसु-मयि० सूर्य-मयि० शिव-मयि० भूत-मयि० ।।✻

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।।

✻ यह 'जयान्त-माला' है । अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'जय जय' है । अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति जयकार की भावना करता जाय । बाह्य पूजन में प्रति 'जय जय' पर पुष्पांजलि छोड़ता जाय ।

✻ ✻ ✻

श्रीशिव-सम्बुद्धयन्त-माला

षष्ठी — दशमी

शुक्ल-पक्ष — कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत् । अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि - युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक - पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक - गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्री-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिव-सम्बुद्धयन्त-माला-मन्त्रस्य घ्राणेन्द्रियाधिष्ठाधि - भगादित्य ऋषिः । त्रिष्टुप् छन्दः । श्रीकामेश्वर-शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । क्लीं शक्तिः । सौः कीलकं । देह-सिद्धौ जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—घ्राणेन्द्रियाधिष्ठाधि - भगादित्य-ऋषये नमः शिरसि । त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। देह-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—

रक्ताम्बरां चन्द्र - कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाभय - दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानसपूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे । यथा—

तथा सिद्धयति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति !
तप्त-काञ्चन - गौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' जोड़कर जप करना चाहिये । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ।।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिन् प्रकाशानन्द-नाथ परमेशानन्द-नाथ पर-शिवानन्द-नाथ कामेश्वरानन्द-नाथ मोक्षानन्द-नाथ कामानन्द-नाथामृतानन्द - नाथ ! सिद्धौघ - गुरु-रूपिन्नीशानानन्द-नाथ तत्पुरुषानन्द - नाथाघोरा-नन्द-नाथ वामदेवानन्द-नाथ सद्योजातानन्द-नाथ! मानवौघ-गुरु-रूपिन् गगनानन्द-नाथ विश्वानन्द-नाथ विमलानन्द-नाथ मदनानन्द-नाथात्मानन्द-नाथ प्रियानन्द-नाथ ! गुरु-चतुष्टय-रूपिन् श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द - नाथ श्रीपरात्पर - गुरु - अमुकानन्द-नाथ श्रीपरमेष्ठि - गुरु-अमुकानन्द-नाथ ! रति - मय प्रीति-मय मनो-भवा-मय ।।

हृदय-देव शिरः-देव शिखा-देव कवच-देव नेत्र-देवास्त्र-देव ।।

मनो-भव मकर-ध्वज कन्दर्प मन्मथ काम-देव ।।

द्राविन् क्षोभिनाकर्षिन् वशी-करिन् सम्मोहिन् ।।

सुभग भग भग - सर्पिन् भग - मालिनन्ङ्गानङ्ग-कुसुमानङ्ग-मेखलानङ्ग-मदन ।।

ब्राह्म माहेश्वर कौमार वैष्णव वाराहेन्द्राण चामुण्ड महा-लक्ष्मी-मया—।।

—सिताङ्ग-भैरव रुरु-भैरव चण्ड-भैरव क्रोध-भैर-वोन्मत्त-भैरव कपालि-भैरव भीषण-भैरव संहारभैरव ।।

कामरूप-पीठ मलय-पीठ कुल-नाग-पीठ कुलान्त-पीठ चौहार-पीठ जालन्धर - पीठोड्ड्यान - पीठ देवी-कोट-पीठ ।।

हेतुक त्रिपुरान्तक वेतालाग्नि - जिह्व कालान्तक कपालैक-पाद भीम-रूप मलय हाटकेश्वरे—।।

—न्द्राग्ने यम निऋते वरुण वायो कुबेरेशान ब्रह्मनन्त ।।

वज्र शक्ति-मय दण्ड खड्ग पाशांकुश गदा-मय त्रिशूल पद्म चक्र ।।

वटुक योगिनी-मय क्षेत्रपाल गणेश वसो सूर्य शिव भूत ।।

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।।卐

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

卐 यह 'सम्बुद्धयन्त-माला' है । अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'सम्बोधन-विभक्ति' है । अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति सम्बोधन की भावना करता जाय । बाह्य पूजन में प्रति 'सम्बोधन' पर हाथ जोड़ता जाय ।

श्रीशिव-नमोऽन्त-माला

सप्तमी शुक्ल-पक्ष | नवमी कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्री-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिव-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-इन्द्रादित्य ऋषिः। जगती छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। लोह-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-इन्द्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। जगती-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। लोह-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—

रक्ताम्बरां चन्द्र - कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाभय - दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानसपूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि' —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि' —ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे। यथा—

त्वद्-भक्त-हस्त-स्पर्शेन लोहोऽप्यष्ट-विधः शिवे !
काञ्चनी-भावनाप्नोति यथा स्याच्छिव-तुल्यता ॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'नमः पादुकां पूजयामि' जोड़कर जप करना चाहिए। यथा-

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि ॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणे० प्रकाशानन्दनाथाय० परमे-शानन्द-नाथाय० पर-शिवानन्द-नाथाय० कामेश्वरानन्द-नाथाय० मोक्षानन्द-नाथाय० कामानन्द-नाथाय नमः पादुकां पूजयाम्यमृतानन्द - नाथाय० ।। सिद्धौघ-गुरु-रूपिणे नमः पादुकां पूजयामीशाना-नन्द-नाथाय० तत्पु-रुषानन्द - नाथाय नमः पादुकां पूजयाम्यघोरा-नन्द-नाथाय० वामदेवानन्द - नाथाय० सद्योजाता - नन्द-नाथाय० ।। मानवौघ-गुरु-रूपिणे० गगनानन्द-नाथाय० विश्वानन्द-नाथाय० विमलानन्द-नाथाय० मदनानन्द-नाथाय नमः पादुकां पूजयाम्यात्मा - नन्द - नाथाय० प्रियानन्द-नाथाय० ।। गुरु - चतुष्टय-रूपिणे० श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथाय० ।। रति-मयाय० प्रीति - मयाय० मनोभवा-मयाय० ।।

हृदय-देवाय० शिरः-देवाय० शिखा-देवाय० कवच-देवाय० नेत्र - देवाय नमः पादुकां पूजयाम्यस्त्र-देवाय० ।।

मनोभवाय० मकरध्वजाय० कन्दर्पाय० मन्मथाय० कामदेवाय० ।।

द्राविणे० क्षोभिणे नमः पादुकां पूजयाम्याऽऽकर्षिणे० वशीकरिणे० सम्मोहिने० ॥

सुभगाय० भगाय० भग-सर्पिणे० भग-मालाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्गाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - मेखलाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनाय० ॥

ब्राह्माय० माहेश्वराय० कौमाराय० वैष्णवाय० वाराहाय नमः पादुकां पूजयामीन्द्राणाय० चामुण्डाय० महा-लक्ष्मी-मयाय नमः पादुकां पूजयाम्य—॥

—सिताङ्ग-भैरवाय० रुरु-भैरवाय० चण्ड-भैरवाय० क्रोध-भैरवाय नमः पादुकां पूजयाम्युन्मत्त - भैरवाय० कपालि-भैरवाय० भीषण-भैरवाय० संहार-भैरवाय० ॥

कामरूप - पीठाय० मलय - पीठाय० कुल-नाग-पीठाय० कुलान्त-पीठाय० चौहार-पीठाय० जालन्धर-पीठाय नमः पादुकां पूजयाम्युड्डयान-पीठाय० देवी-कोट-पीठाय० ॥

हेतुकाय० त्रिपुरान्तकाय० वेतालाय नमः पादुकां पूजयाम्यग्नि-जिह्वाय० कालान्तकाय० कपालाय नमः पादुकां पूजयाम्येक-पादाय० भीम-रूपाय० मलयाय० हाटकेश्वराय नमः पादुकां पूजयामी—॥

—न्द्राय नमः पादुकां पूजयाम्यग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय नमः पादुकां पूजयामीशानाय० ब्रह्मणे नमः पादुकां पूजयाम्य-नन्ताय०॥

वज्राय० शक्ति-मयाय० दण्डाय० खड्गाय० पाशाय नमः पादुकां पूजयाम्यंकुशाय० गदा-मयाय० त्रिशूलाय० पद्माय० चक्राय० ॥

वटुकाय० योगिनी - मयाय० क्षेत्रपालाय० गणेशाय० वसवे० सूर्याय० शिवाय०, भूताय० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ❁

जप-समर्पण—

ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥

❁ यह 'नमोऽन्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के जप के साथ उस - उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवताओं के प्रति नमस्कार-पूर्वक पादुका-पूजन की भावना करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति 'पूजयामि' पर पूजन-यन्त्र में पुष्पाञ्जलि देता जाय।

(८)

श्रीशिव-स्वाहान्त-माला

अष्टमी शुक्ल-पक्ष | अष्टमी कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिव-स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य चक्षुरिन्द्रयाधिष्ठायि-विवस्वदादित्य ऋषिः। अति-जगती छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि-विवस्वदादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-जगती-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देव-

तायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अणिमाद्य-ष्टैश्वर्य-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाभय-दान - हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे । यथा—

येऽष्टाणुत्व-महत्वाद्याः स्वेच्छा-मात्र-प्रकल्पिताः ।
तव भक्त-शरीराणां ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'स्वाहा' जोड़कर जप करना चाहिये । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा ।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणे स्वाहा प्रकाशानन्द-नाथाय० परमेशानन्द-नाथाय० पर-शिवानन्द-नाथाय० कामेश्वरानन्द-नाथाय० मोक्षानन्द-नाथाय० कामानन्द-नाथाय० स्वाहाऽमृतानंद-नाथाय०। सिद्धौघ-गुरु-रूपिणे० ईशानानंद-नाथाय० तत्पुरुषानंद-नाथाय० स्वाहाऽघोरानंद-नाथाय० वाम - देवानंद - नाथाय० सद्योजातानंद-नाथाय०। मानवौघ-गुरु-रूपिणे० गगनानन्द-नाथाय० विश्वानंद-नाथाय० विमलानन्द-नाथाय० मदनानन्द-नाथाय स्वाहाऽऽत्मानद-नाथाय० प्रियानंद-नाथाय०। गुरु-चतुष्टय-रूपिणे० श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्री परम-गुरु-अमुकानंद-नाथाय० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानंद - नाथाय० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानंद-नाथाय०। रति-मयाय० प्रीति-मयाय० मनो-भवा-मयाय०॥

हृदय-देवाय० शिरः-देवाय० शिखा-देवाय० कवच-देवाय० नेत्र-देवाय स्वाहाऽस्त्र-देवाय०॥

मनोभवाय० मकरध्वजाय० कन्दर्पाय० मन्मथाय० कामदेवाय०॥

द्राविणे० क्षोभिणे स्वाहाऽऽकर्षिणे० वशी-करिणे० सम्मोहिने०॥

सुभगाय० भगाय० भग-सर्पिणे० भग-मालाय०

स्वाहाऽनङ्गाय स्वाहाऽनङ्ग-कुसुमाय स्वाहाऽनङ्ग-मेखलाय स्वाहाऽनङ्ग-मदनाय० ॥

ब्राह्माय० माहेश्वराय० कौमाराय० वैष्णवाय० वाराहाय० इन्द्राणाय० चामुण्डाय० महालक्ष्मी-मयाय स्वाहा—।।

—ऽसिताङ्ग-भैरवाय० रुरु-भैरवाय० चण्ड-भैरवाय० क्रोध-भैरवाय० उन्मत्त-भैरवाय० कपालि-भैरवाय० भीषण-भैरवाय० संहार-भैरवाय० ॥

कामरूप-पीठाय० मलय-पीठाय० कुल-नाग-पीठाय० कुलान्त-पीठाय० चौहार-पीठाय० जालन्धर-पीठाय० उड्डयान-पीठाय० देवी-कोट-पीठाय० ॥

हेतुकाय० त्रिपुरान्तकाय० वेतालाय स्वाहाऽग्नि-जिह्वाय० कालान्तकाय० कपालाय० एक-पादाय० भीम-रूपाय० मलयाय० हाटकेश्वराय० ॥

इन्द्राय स्वाहाऽग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ब्रह्मणे स्वाहाऽनन्ताय० ॥

वज्राय० शक्ति-मयाय० दण्डाय० खड्गाय० पाशाय स्वाहांकुशाय० गदा-मयाय० त्रिशूलाय० पद्माय० चक्राय० ॥

वटुकाय० योगिनी-मयाय० क्षेत्रपालाय० गणेशाय० वसवे० सूर्याय० शिवाय० भूताय० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरि ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ❀

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे । यथा–

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥
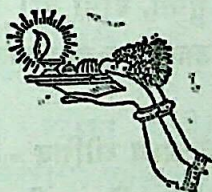
❀ यह 'स्वाहान्त-माला' है । अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' है । अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति हवन की भावना मन में करता जाय । बाह्य पूजन में प्रति 'स्वाहा' पर हवन-कुण्ड में घृत की आहुतियाँ देता जाय ।

श्रीशिव-तर्पणान्त-माला

नवमी **सप्तमी**

शुक्ल-पक्ष **कृष्ण-पक्ष**

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिव - तर्पणान्त - माला-मन्त्रस्य त्वगिन्द्रियाधिष्ठायि-पूषादित्य ऋषिः। शक्वरी छन्दः। श्रीकामेश्वर - शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्व-वश्य-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—त्वगिन्द्रियाधिष्ठायि - पूषादित्य-ऋषये नमः शिरसि। शक्वरी - छन्दसे नमः मुखे।

श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी-देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्व-वश्य-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप - वटीका पुस्तिकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याण-शीला॥

मानस पूजा—

१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता - श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो - मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'-

अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि — ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे। यथा—

शरीरमर्थं प्राणांश्च निवेद्य निज-भृत्य-वत्।
तव भक्तान् निषेवन्ते वशी-भूता नृपादयः॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'तर्पयामि' जोड़कर जप करना चाहिये। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणं तर्पयामि प्रकाशानन्द-नाथं० परमेशानन्द - नाथं० पर-शिवानन्द-नाथं० कामेश्वरानन्द - नाथं० मोक्षानन्द - नाथं० कामानन्द - नाथं तर्पयाम्यमृतानंद-नाथं० । सिद्धौघ-गुरु-रूपिणं० ईशानानंद - नाथं० तत्पुरुषानंद - नाथं तर्पयाम्यघोरानंद-नाथं० वाम - देवानंद - नाथं० सद्योजातानंद - नाथं० । मानवौघ-गुरु - रूपिणं० गगनानन्द - नाथं० विश्वानंद - नाथं० विमलानन्द - नाथं० मदनानन्द-नाथं तर्पयाम्यात्मानंद - नाथं० प्रियानंद - नाथं० । गुरु-चतुष्टय-रूपिणं० श्रीगुरु - अमुकानन्द-नाथं० श्री-परम-गुरु-अमुकानंद-नाथं० श्रीपरात्पर - गुरु-अमुकानंद - नाथं० श्रीपरमेष्ठि - गुरु - अमुकानंद-नाथं० । रति-मयं० प्रीति-मयं० मनो-भवा-मयं० ॥

हृदय-देवं० शिरः - देवं० शिखा - देवं० कवच-देवं० नेत्र-देवं तर्पयाम्यऽस्त्र-देवं० ॥

मनोभवं० मकर-ध्वजं० कन्दर्पं० मन्मथं० कामदेवं० ॥

द्राविणं० क्षोभिणं तर्पयाम्याकर्षिणं० वशी-करिणं० सम्मोहिनं० ॥

सुभगं० भगं० भग - सर्पिणं० भग - मालं

तर्पयाम्यनङ्गं तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमं तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनं० ॥

ब्राह्मं० माहेश्वरं० कौमारं० वैष्णवं० वाराहं० इन्द्राणं० चामुण्डं० महालक्ष्मी-मयं तर्पया—॥

—म्यसिताङ्ग-भैरवं० रुरु-भैरवं० चण्ड-भैरवं० क्रोध-भैरवं० उन्मत्त-भैरवं० कपालि-भैरवं० भीषण-भैरवं० संहार-भैरवं० ॥

कामरूप-पीठं० मलय-पीठं० कुल-नाग-पीठं० कुलान्त-पीठं० चौहार-पीठं० जालन्धर-पीठं० उड्डयान-पीठं० देवी-कोट-पीठं० ॥

हेतुकं० त्रिपुरान्तकं० वेतालं तर्पयाम्यग्नि-जिह्वकं० कालान्तकं० कपालं० एक-पादं० भीम-रूपं० मलयं० हाटकेश्वरं० ॥

इन्द्रं तर्पयाम्यग्नि० यमं० निर्ऋतिं० वरुणं० वायुं० कुबेरं० ईशानं० ब्रह्माणं तर्पया-म्यनन्तं० ॥

वज्रं० शक्ति-मयं० दण्डं० खड्गं० पाशं तर्पयाम्यं-कुशं० गदा-मयं० त्रिशूलं० पद्मं० चक्रं० ॥

वटुकं योगिनी-मयं० क्षेत्रपालं० गणेशं० वसुं० सूर्यं०शिवं० भूतं० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ॐ

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा—

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥
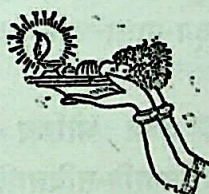
ॐ यह 'तर्पणान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'तर्पयामि' है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति कुल-कुण्डलिनी में तर्पण की भावना मन में करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति 'तर्पण' पर जिह्वाग्र-स्थित कुल-कुण्डलिनी को अमृत का तर्पण कराता जाय।

श्री शिव-जयान्त-माला

दशमी शुक्ल-पक्ष | षष्ठी कृष्ण-पक्ष

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिव - जयान्त - माला-मन्त्रस्य श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-सवित्रादित्य ऋषिः। अति-शक्वरी छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव - सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्वाकर्षण-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-सवित्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-शक्वरी-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्वाकर्षण-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—

रक्ताम्बरां चन्द्र - कलावतंसाम्,

समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।

विद्याक्ष-मालाभय - दान - हस्ताम्,

ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानसपूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि' —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि' —ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे । यथा—

लोह - प्राकार - संगुप्ता निगडैर्यन्त्रिता अपि ।
त्वद्-भक्तैः कृष्य-माणाश्च समायान्त्येव योषितः ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'जय जय' जोड़कर जप करना चाहिए। यथा-

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः त्रिपुर - सुन्दर जय जय ।।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिन्० प्रकाशानन्द-नाथ० परमेशानन्द-नाथ० पर-शिवानन्द-नाथ० कामेश्वरानन्द-नाथ० मोक्षानन्द-नाथ० कामानन्द - नाथ जय जयामृतानन्द-नाथ० । सिद्धौघ-गुरु-रूपिन् जय जयेशानानन्द-नाथ० तत्पुरुषानन्द-नाथ जय जयाघोरा-नन्द - नाथ० वाम-देवानन्द-नाथ० सद्योजातानन्द - नाथ० मानवौघ-गुरु-रूपिन्० गगनानन्द-नाथ० विश्वानन्द-नाथ० विमलानन्द-नाथ० मदनानन्द-नाथ जय जयात्मानन्द-नाथ० प्रियानन्द-नाथ० गुरु-चतुष्टय-रूपिन्० श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ० श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ० श्रीपरमेष्ठि - गुरु-अमुकानन्द-नाथ० रति - मय० प्रीति-मय० मनो-भवा-मय० ॥

हृदय-देव० शिरः-देव० शिखा-देव० कवच-देव० नेत्र-देव जय जयास्त्र-देव० ॥

मनो-भव० मकर-ध्वज० कन्दर्प० मन्मथ० काम-देव० ॥

द्राविन्० क्षोभिन जय जयाकर्षिन्० वशी-करिन्० सम्मोहिन्० ॥

सुभग० भग० भग - सर्पिन्० भग - मालिन् जय जयानङ्ग जय जयानङ्ग - कुसुम जय जयानङ्ग-मेखल जय जयानङ्ग-मदन० ॥

ब्राह्म० माहेश्वर० कौमार० वैष्णव० वाराह जय जयेन्द्राण० चामुण्ड० महा-लक्ष्मी-मय जय जया—।।

—सिताङ्ग-भैरव० रुरु-भैरव० चण्ड-भैरव० क्रोध-भैरव जय जयोन्मत्त-भैरव० कपालि - भैरव० भीषण-भैरव० संहार-भैरव० ।।

काम-रूप-पीठ० मलय - पीठ० कुल - नाग-पीठ० कुलान्त-पीठ० चौहार-पीठ० जालन्धर-पीठ जय जयो-ड्डयान-पीठ० देवी-कोट-पीठ० ।।

हेतुक० त्रिपुरान्तक० वेताल जय जयाग्नि-जिह्व० कालान्तक० कपाल जय जयैक - पाद० भीम - रूप० मलय० हाटकेश्वर जय जये—।।

—न्द्र जय जयाग्ने० यम० निऋते०वरुण० वायो० कुबेर जय जयेशान० ब्रह्मन् जय जयानन्त० ।।

वज्र० शक्ति-मय० दण्ड० खड्ग० पाश जय जयांकुश० गदा-मय० त्रिशूल० पद्म० चक्र० ।।

वटुक० योगिनी-मय० क्षेत्रपाल० गणेश० वसो० सूर्य० शिव० भूत० ।।

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।।❁

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

❁ यह 'जयान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'जय जय' है। अतः मन्त्र - जप के साथ उस - उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति सम्बोधन की भावना करता जाय। बाह्य पूजन में प्रति 'जय जय' पर पुष्पाञ्जलि जोड़ता जाय।
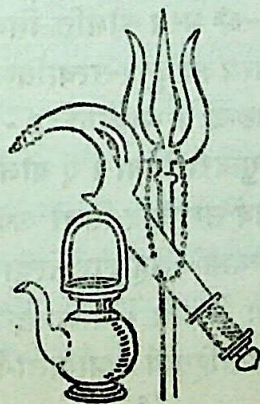
श्रीमिथुन-सम्बुद्धयन्त-माला

एकादशी
शुक्ल-पक्ष

पञ्चमी
कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत् । अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि - युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक - पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक - गोत्रोत्पन्नोऽमुक - नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध-चन्त-माला-मन्त्रस्य अहङ्कार-तत्त्वाधिष्ठायि-त्वष्ट्रादित्य ऋषिः । अष्टिच्छन्दः । श्रीकामेश्वर - शिव - सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । क्लीं शक्तिः । सौः कीलकं । सर्व-सम्मोहन-सिद्धौ जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—अहङ्कार-तत्त्वाधिष्ठायि-त्वष्ट्रा-दित्य-ऋषये नमः शिरसि । अष्टिच्छन्दसे नमः मुखे । श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः नाभौ । सौः कीलकाय नमः पादयोः । सर्व-सम्मोहन-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,

समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम् ।

विद्याक्ष-मालाभय-दान - हस्ताम्,

ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ।।

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे । यथा—

अम्बिके ! तव भक्तानामवलोकन-मात्रतः ।
कृत्याकृत्य-विमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'सम्बोधन विभक्ति' जोड़कर जप करना चाहिये । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ।।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणि दिव्यौघ-गुरु-रूपिन्, प्रकाशानन्दनाथ-मयि प्रकाशानन्दनाथ, परमेशानन्द-नाथ-मयि परमेशानन्द-नाथ, पर-शिवा-नन्द-नाथ-मयि पर-शिवानन्द-नाथ, कामेश्वरानन्द-नाथ - मयि कामेश्वरानन्द-नाथ, मोक्षानन्द-नाथ-मयि मोक्षानन्द-नाथ, कामानन्द-नाथ-मयि कामानन्द-नाथामृतानन्द-नाथ-मय्यमृतानन्द-नाथ ।। सिद्धौघ-गुरु-रूपिणि सिद्धौघ-गुरु-रूपिनीशाना-नन्द-नाथ-मयीशाना-नन्द-नाथ, तत्पुरुषानन्द-नाथ-मयि तत्पुरुषानन्द-नाथाघोरा-नन्द-नाथ-मय्यघोरानन्द-नाथ, वामदेवानन्द-नाथ-मयि वामदेवानन्द-नाथ, सद्योजातानन्द-नाथ-मयि सद्योजातानन्द-नाथ ।। मानवौघ-गुरु-रूपिणि मानवौघ-गुरु-रूपिन्, गगनानन्द - नाथ - मयि गगनानन्द-नाथ, विश्वानन्द-नाथ-मयि विश्वानन्द-नाथ, विमलानन्द-नाथ-मयि विमलानन्द - नाथ, मदनानन्द-नाथ-मयि मदनानन्द-नाथात्मानन्द-नाथ-मय्यात्मानन्द-नाथ, प्रियानन्द-नाथ-मयि प्रियानन्द-नाथ ।। गुरु-चतुष्टय-रूपिणि गुरु-चतुष्टय-रूपिन्, श्रीगुरु - अमुकानन्द-नाथ-मयि श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथ, श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द - नाथ, श्री परात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मयि श्रीपरात्पर-गुरु-

अमुकानन्द-नाथ, श्रीपरमेष्ठि-गुरु - अमुकानन्द - नाथ-मयि श्रीपरमेष्ठि - गुरु - अमुकानन्द - नाथ ।। रते रति - मय, प्रीते प्रीति - मय, मनोभवे मनो-भवा-मय ।।

हृदय-देवि हृदय-देव, शिरः - देवि शिरः-देव, शिखा-देवि शिखा-देव, कवच-देवि कवच-देव, नेत्र-देवि नेत्र-देवास्त्र-देव्यस्त्र-देव ।।

मनोभव-मयि मनोभव, मकर-ध्वज-मयि मकर-ध्वज, कन्दर्प-मयि कन्दर्प, मन्मथ-मयि मन्मथ, काम-देव-मयि काम - देव ।।

द्राविणि द्राविन्, क्षोभिणि क्षोभिनाकर्षिण्याऽऽ-कर्षिन्, वशीकरिणि वशीकरिन्, सम्मोहिनि सम्मो-हिन् ।।

सुभगे सुभग, भगे भग, भग-सर्पिणि भग-सर्पिन्, भग-माले भग - माला - नङ्गेऽनङ्गानङ्ग - कुसुमेऽनङ्ग कुसुमानङ्ग-मेखलेऽनङ्ग-मेखलानङ्ग-मदनेऽनङ्ग-मदन ।।

ब्राह्मि - ब्राह्म, माहेश्वरि माहेश्वर, कौमारि कौमार, वैष्णवि वैष्णव, वाराहि वाराहेन्द्राणीन्द्राण, चामुण्डे चामुण्ड, महा-लक्ष्मि महा-लक्ष्मी-मय ।।

—ऽसिताङ्ग-भैरव-मय्यसिताङ्ग-भैरव रुरु-भैरव-मयि रुरु-भैरव चण्ड-भैरव-मयि चण्ड-भैरव क्रोध-भैरव-मयि क्रोध - भैरवोन्मत्त-भैरव-मय्युन्मत्त-भैरव कपालि-भैरव-मयि कपालि-भैरव भीषण-भैरव-मयि भीषण-भैरव संहार-भैरव-मयि संहार-भैरव ॥

काम-रूप-पीठ-मयि काम-रूप-पीठ मलय-पीठ-मयि मलय - पीठ कुल-नाग-पीठ-मयि कुल-नाग-पीठ कुला-न्त-पीठ-मयि कुलान्त-पीठ चौहार-पीठ-मयि चौहार-पीठ जालन्धर-पीठ-मयि जालन्धर-पीठोड्डचान-पीठ-मय्यु-ड्डचान-पीठ देवी-कोट-पीठ-मयि देवी-कोट-पीठ ॥

हेतुक-मयि हेतुक त्रिपुरान्तक-मयि त्रिपुरान्तक वेताल-मयि वेतालाग्नि-जिह्व-मय्यग्नि-जिह्व कालान्तक-मयि कालान्तक कपाल-मयि कपालैक-पाद-मय्यैक-पाद भीम-रूप-मयि भीम-रूप मलय-मयि मलय हाटकेश्वर-मयि हाटकेश्वरे—॥

—न्द्र-मय्येन्द्राग्नि-मय्यग्ने यम-मयि यम निऋृति-मयि निऋृते वरुण-मयि वरुण वायु-मयि वायो कुबेर-मयि कुबेरेशान - मय्येशान ब्रह्म - मयि ब्रह्मननन्त-मय्यनन्त ॥

वज्र-मयि वज्र शक्ते शक्ति-मय दण्ड-मयि दण्ड खड्ग-मयि खड्ग पाश-मयि पाशांकुश-मय्यंकुश गदे गदा-मय त्रिशूल-मयि त्रिशूल पद्म-मयि पद्म चक्र-मयि चक्र ।।

वटुक-मयि वटुक योगिनि योगिनी-मय क्षेत्रपाल-मयि क्षेत्रपाल गणेश-मयि गणेश वसु-मयि वसो सूर्य-मयि सूर्य शिव-मयि शिव भूत-मयि भूत ।।

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।। ❀

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे । यथा—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

❀ यह 'सम्बुद्धयन्त-माला' है । अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में सम्बोधन (आवाहन) की विभक्ति है । अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता का मैं आवाहन कर रहा हूँ, यह भावना मन में करता जाय । बाह्य पूजन में प्रति 'सम्बोधन' पर देवता के प्रति हाथ जोड़ता जाय ।

मिथुन-नमोऽन्त-माला

द्वादशी
शुक्ल-पक्ष

चतुर्थी
कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य बुद्धि-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्णवादित्य ऋषिः। अत्यष्टिच्छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्व-स्तम्भन-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—बुद्धि-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्णवादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अत्यष्टिच्छन्दसे नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्व-स्तम्भन-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाऽभय-दान-हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि' —ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि' —ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे। यथा—

देवि ! त्वद्-भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रिय-चेतसाम्।
स्तम्भनाद् वैरिणः स्तब्धाः स्व-स्व-कार्य-पराङ्-मुखाः॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'नमः श्रीपादुकां पूजयामि' जोड़ ले। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दर्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामि श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दराय नमः श्रीपादुकां पूजयामि॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिण्यै नमः श्रीपादुकां पूज० दिव्यौघ-गुरुभ्यो० प्रकाशानन्दनाथ-मय्यै० प्रकाशानन्द-नाथाय० परमेशानन्द - नाथ-मय्यै० परमेशानन्द-नाथाय० पर-शिवानन्द-नाथ-मय्यै० पर-शिवानन्द-नाथाय० कामे-श्वरानन्द-नाथ-मय्यै० कामेश्वरानन्द-नाथाय० मोक्षा-नन्द-नाथ-मय्यै० मोक्षानन्द-नाथाय० कामानन्द-नाथ-मय्यै० कामानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यमृता-नंदनाथ-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यमृतानंद-नाथाय०॥ सिद्धौघ-गुरु-रूपिण्यै० सिद्धौघ-गुरुभ्यो नमः श्रीपादुकां पूजयामीशानानन्द-नाथ-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामी-शानानन्दनाथाय० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मय्यै० तत्पुरुषा-नन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यघोरानन्द-नाथ-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यघोरानन्द - नाथाय० वाम-देवानन्द-नाथ - मय्यै० वाम-देवानन्द - नाथाय० सद्योजातानन्द - नाथ - मय्यै० सद्योजातानन्द-नाथाय० ॥ मानवौघ - गुरु - रूपिण्यै० मानवौघ-गुरुभ्यो० गगनानन्द-नाथ-मय्यै० गगनानन्द-नाथाय० विश्वानन्द-नाथ-मय्यै० विश्वानन्द-नाथाय० विमला-नन्द-नाथ-मय्यै० विमलानन्द - नाथाय० मदनानन्द-नाथ-मय्यै० मदनानन्द-नाथाय नमः श्रीपादुकां पूजया-

म्यात्मानन्द-नाथ-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यात्मानन्द-नाथाय० प्रियानन्द-नाथ-मय्यै० प्रियानन्द-नाथाय० ॥ गुरु - चतुष्टय - रूपिण्यै० गुरु - चतुष्टयाय० श्रीगुरु-अमुकानन्दनाथ-मय्यै० श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मय्यै० श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द-नाथाय० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथाय०श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द - नाथाय० ॥ रत्यै० रति-मयाय० प्रीत्यै० प्रीति-मयाय० मनोभवायै० मनोभवा-मयाय० ॥

हृदय-देव्यै० हृदय-देवाय० शिरः - देव्यै० शिरः-देवाय० शिखा-देव्यै० शिखा-देवाय० कवच-देव्यै० कवच-देवाय० नेत्र-देव्यै० नेत्र-देवाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यस्त्र-देव्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यस्त्र-देवाय०॥

मनोभव-मय्यै० मनोभवाय० मकर-ध्वज-मय्यै० मकर-ध्वजाय० कन्दर्प-मय्यै० कन्दर्पाय० मन्मथ-मय्यै० मन्मथाय० काम-देव-मय्यै० काम - देवाय० ॥

द्राविण्यै० द्राविणे० क्षोभिण्यै० क्षोभिणे नमः श्रीपादुकां पूजयाम्याकर्षिण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्या-

कर्षिणे० वशीकरिण्यै० वशीकरिणे० सम्मोहिन्यै० सम्मोहिने० ॥

सुभगायै० सुभगाय० भगायै० भगाय० भग-सर्पिण्यै भग-सर्पिणे० भग-मालायै० भग-मालाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्गायै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्य-नङ्गाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमायै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग - कुसुमाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलायै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनायै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनाय० ॥

ब्राह्म्यै० ब्रह्मणे० माहेश्वर्यै० महेश्वराय० कौमार्यै० कुमाराय० वैष्णव्यै० विष्णवे० वाराह्यै० वराहाय नमः श्रीपादुकां पूजयामीन्द्राण्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामीन्द्राय० चामुण्डायै० चामुण्डाय० महा-लक्ष्म्यै० महा-लक्ष्मी-मयाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्य— ॥

—सिताङ्ग-भैरव-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यसि-ताङ्ग-भैरवाय० रुरु-भैरव-मय्यै० रुरु-भैरवाय० चण्ड-भैरव-मय्यै० चण्ड-भैरवाय० क्रोध-भैरव-मय्यै० क्रोध-भैरवाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्युन्मत्त-भैरव-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्युन्मत्त-भैरवाय० कपालि-भैरव-मय्यै०

कपालि-भैरवाय० भीषण-भैरव-मय्यै० भीषण-भैरवाय० संहार-भैरव-मय्यै० संहार-भैरवाय० ॥

काम-रूप-पीठ-मय्यै० काम-रूप-पीठाय० मलय-पीठ-मय्यै० मलय-पीठाय० कुल-नाग-पीठ-मय्यै० कुल-नाग-पीठाय० कुलान्त-पीठ-मय्यै० कुलान्त - पीठाय० चौहार-पीठ-मय्यै० चौहार-पीठाय० जालंधर-पीठ-मय्यै० जालन्धर-पीठाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्युड्डयान-पीठ-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्युड्डयान-पीठाय० ॥

हेतुक-मय्यै० हेतुकाय० त्रिपुरान्तक-मय्यै० त्रिपुरान्तकाय० वेताल-मय्यै० वेतालाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यग्नि-जिह्व-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यग्नि-जिह्वाय० कालान्तक-मय्यै० कालान्तकाय० कपाल-मय्यै० कपालाय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्येक-पाद-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्येक - पादाय० भीम-रूप-मय्यै० भीम-रूपाय० मलय-मय्यै० मलयाय० हाटकेश्वर-मय्यै० हाटकेश्वराय नमः श्रीपादुकां पूजयामी—॥

—न्द्र-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामीन्द्राय नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यग्नि-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयाम्यग्नये० यम-मय्यै० यमाय० निऋति-मय्यै० निऋतये० वरुण-मय्यै० वरुणाय० वायु-मय्यै० वायवे० कुबेर-मय्यै० कुबेराय

नमः श्रीपादुकां पूजयामीशान-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयामीशानाय० ब्रह्मा-मय्यै० ब्रह्मणे नमः श्रीपादुकां पूजयास्यनन्त-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयास्यनन्ताय० ॥

वज्र-मय्यै० वज्राय० शक्त्यै० शक्ति-मयाय०दण्ड-मय्यै०दण्डाय०खड्ग-मय्यै०खड्गाय०पाश-मय्यै०पाशाय नमः श्रीपादुकां पूजयास्यंकुश-मय्यै नमः श्रीपादुकां पूजयास्यंकुशाय० गदायै० गदा-मयाय० त्रिशूल-मय्यै० त्रिशूलाय० पद्म-मय्यै० पद्माय० चक्र-मय्यै० चक्राय० ॥

वटुक-मय्यै० वटुकाय० योगिन्यै० योगिनी-मयाय० क्षेत्रपाल-मय्यै० क्षेत्रपालाय० गणेश-मय्यै० गणेशाय० वसु-मय्यै० वसो० सूर्य-मय्यै सूर्याय० शिव-मय्यै० शिवाय० भूत-मय्यै० भूताय० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ।।⊞

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ।।

⊞ यह 'नमोऽन्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'नमः श्रीपादुकां पूजयामि' है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति मन में नमस्कार की भावना करता जाय। बाह्य पूजन में प्रति जप-मन्त्र पर यन्त्र पर पुष्पाञ्जलि छोड़ता जाय।

मिथुन-स्वाहान्त-माला

त्रयोदशी शुक्ल-पक्ष — तृतीया कृष्ण-पक्ष

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्‌ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति - शिव-मिथुन-स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य मनस्तत्वाधिष्ठायि-ब्रह्मात्मन्-प्रातरादित्य ऋषिः । धृतिच्छन्दः । श्रीकामेश्वर-शिव-क्लीं सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । शक्तिः । सौः कीलकं । सर्व-वश्य-सिद्धौ जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—मनस्तत्वाधिष्ठायि ब्रह्मात्मने प्रात-रादित्य-ऋषये नमः शिरसि । धृतिच्छन्दसे नमः मुखे । श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कालकाय नमः पादयोः। सर्व-वश्य-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,

समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।

विद्याक्ष-मालाभय-दान-हस्ताम्,

ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—

१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'-अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूल श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे । यथा—

धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चेति चतुष्टयम् ।
तव भक्तः स्व-भक्तेभ्यः प्रयच्छत्यप्रयासतः ॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'स्वाहा' जोड़कर जप करना चाहिये । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दर्यै स्वाहा श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा ॥

दिव्यौघ गुरु-रूपिण्यै स्वाहा दिव्यौघ-गुरुभ्यो स्वाहा प्रकाशानन्द-नाथ - मय्यै० प्रकाशानन्द - नाथाय० परमेशानन्द - नाथ - मय्यै० परमेशानन्द - नाथाय० पर-शिवानन्द-नाथ - मय्यै० पर-शिवानन्द - नाथाय० कामेश्वरानन्द - नाथ - मय्यै० कामेश्वरानन्द-नाथाय० मोक्षानन्द-नाथ-मय्यै० मोक्षानन्द-नाथाय० कामानन्द-नाथ-मय्यै० कामानन्द-नाथाय स्वाहाऽमृतानन्द-नाथ-मय्यै स्वाहाऽमृतानन्द - नाथाय० ।। सिद्धौघ - गुरु-रूपिण्यै० सिद्धौघ-गुरुभ्यो स्वाहेशानानन्द-नाथ-मय्यै स्वाहेशानानन्द - नाथाय० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मय्यै० तत्पुरुषानन्द-नाथाय स्वाहाऽघोरा - नन्द - नाथ-मय्यै स्वाहाऽघोरानन्द-नाथाय० वाम-देवानन्द-नाथ-मय्यै० वाम-देवानन्द-नाथाय० सद्योजातानन्द - नाथ-मय्यै० सद्योजातानन्द-नाथाय० ।। मानवौघ-गुरु-रूपिण्यै० मान-वौघ - गुरुभ्यो० गगनानन्द - नाथ-मय्यै० गगनानन्द-नाथाय० विश्वानन्द-नाथ-मय्यै० विश्वानन्द-नाथाय० विमलानन्द-नाथ-मय्यै० विमलानन्द-नाथाय० मदनानन्द-नाथ-मय्यै० मदनानन्द-नाथाय स्वाहाऽऽत्मानन्द-नाथ-मय्यै स्वाहाऽऽत्मानन्द-नाथाय० प्रियानन्द-नाथ-मय्यै० प्रियानन्द - नाथाय० ।। गुरु-चतुष्टय-रूपिण्यै०

गुरु - चतुष्टयाय॰ श्रीगुरु - अमुकानन्द - नाथ-मय्यै॰ श्रीगुरु-अमुकानन्द-नाथाय॰ श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै॰ श्रीपरम-गुरु-अमुकानन्द-नाथाय॰ श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मय्यै॰ श्रीपरात्पर - गुरु-अमुकानन्द-नाथाय॰ श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मय्यै॰ श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द - नाथाय॰ रत्यै॰ रति - मयाय॰ प्रीत्यै॰ प्रीति - मयाय॰ मनोभवायै॰ मनोभवा-मयाय॰ ॥

हृदय-देव्यै॰ हृदय-देवाय॰ शिरः-देव्यै॰ शिरः-देवाय॰ शिखा-देव्यै॰ शिखा-देवाय॰ कवच-देव्यै॰ कवच-देवाय॰ नेत्र-देव्यै॰ नेत्र-देवाय स्वाहाऽस्त्र-देव्यै स्वाहाऽस्त्र-देवाय॰ ॥

मनो-भव-मय्यै॰ मनोभवाय॰ मकर-ध्वज-मय्यै॰ मकर-ध्वजाय॰ कन्दर्प-मय्यै॰ कन्दर्पाय॰ मन्मथ-मय्यै॰ मन्मथाय॰ काम-देव-मय्यै॰ काम-देवाय॰ ॥

द्राविण्यै॰ द्राविणे॰ क्षोभिण्यै॰ क्षोभिणे स्वाहाऽऽकर्षिण्यै स्वाहाऽऽकर्षिणे॰ वशी - करिण्यै॰ वशीकरिणे॰ सम्मोहिन्यै॰ सम्मोहिने॰ ॥

सुभगायै॰ सुभगाय॰ भगायै॰ भगाय॰ भग-सर्पिण्यै॰ भग - सर्पिणे॰ भग-मालायै॰ भग-मालाय॰

स्वाहाऽनङ्गायै स्वाहाऽनङ्गाय स्वाहाऽनङ्ग - कुसुमायै स्वाहाऽनङ्ग-कुसुमाय स्वाहाऽनङ्ग-मेखलायै स्वाहाऽनङ्ग-मेखलाय स्वाहाऽनङ्ग-मदनायै स्वाहाऽनङ्ग-मदनाय० ॥

ब्राह्म्यै० ब्रह्मणे० माहेश्वर्यै० महेश्वराय० कौमार्यै० कुमाराय० वैष्णव्यै विष्णवे० वाराह्यै० वराहाय स्वाहेन्द्राण्यै स्वाहेन्द्राय० चामुण्डायै० चामुण्डाय० महा-लक्ष्म्यै० महालक्ष्मी-मयाय स्वाहाऽ—॥

—सिताङ्ग-भैरव-मय्यै स्वाहाऽसिताङ्ग-भैरवाय० रुरु-भैरव-मय्यै० रुरु-भैरवाय० चण्ड-भैरव-मय्यै० चण्ड-भैरवाय० क्रोध-भैरव-मय्यै० क्रोध-भैरवाय स्वाहोन्मत्त-भैरव-मय्यै स्वाहोन्मत्त-भैरवाय० कपालि-भैरव-मय्यै० कपालि-भैरवाय० भीषण-भैरव-मय्यै० भीषण-भैरवाय० संहार-भैरव-मय्यै० संहार-भैरवाय० ॥

काम-रूप-पीठ-मय्यै० काम - रूप-पीठाय० मलय-पीठ-मय्यै० मलय-पीठाय० कुल-नाग-पीठ-मय्यै० कुल-नाग-पीठाय० कुलान्त-पीठ-मय्यै० कुलान्त - पीठाय० चौहार-पीठ - मय्यै० चौहार-पीठाय० जालन्धर-पीठ-मय्यै० जालन्धर - पीठाय स्वाहोड्डयान - पीठ-मय्यै स्वाहोड्डयान-पीठाय० ॥

हेतुक-मय्यै० हेतुकाय० त्रिपुरान्तक-मय्यै० त्रिपुरा-न्तकाय० वेताल-मय्यै० वेतालाय स्वाहाऽऽग्नि - जिह्व-मय्यै स्वाहाऽऽग्नि-जिह्वाय० कालान्तक-मय्यै० काला-न्तकाय० कपाल-मय्यै० कपालाय स्वाहैक - पाद-मय्यै स्वाहैक-पादाय० भीम-रूप-मय्यै० भीम-रूपाय० मलय-मय्यै० मलयाय० हाटकेश्वर - मय्यै० हाटकेश्वराय स्वाहे—।।

—न्द्र-मय्यै स्वाहेन्द्राय स्वाहाऽऽग्नि-मय्यै स्वाहाऽऽ-ग्नये० यम-मय्यै० यमाय० निऋति-मय्यै० निऋतये० वरुण-मय्यै०वरुणाय०वायु-मय्यै० वायवे० कुबेर-मय्यै० कुबेराय स्वाहेशान-मय्यै स्वाहेशानाय० ब्रह्म-मय्यै० ब्रह्मणे स्वाहाऽऽनन्त-मय्यै स्वाहाऽऽनन्ताय० ।।

वज्र-मय्यै० वज्राय० शक्तये० शक्ति-मयाय०दण्ड-मय्यै०दण्डाय०खड्ग-मय्यै०खड्गाय०पाश-मय्यै० पाशाय स्वाहांकुश - मय्यै स्वाहांकुशाय० गदायै० गदा-मयाय० त्रिशूल-मय्यै० त्रिशूलाय० पद्म-मय्यै० पद्माय० चक्र-मय्यै० चक्राय० ।।

वटुक-मय्यै० वटुकाय० योगिन्यै० योगिनी-मयाय० क्षेत्रपाल-मय्यै० क्षेत्रपालाय० गणेश-मय्यै० गणेशाय०

वसु-मय्यै० वसो० सूर्य-मय्यै० सूर्याय० शिव-मय्यै० शिवाय० भूत-मय्यै० भूताय० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥❋

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥

❋ यह 'स्वाहाऽन्त-माला' है । अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' है । अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति चित्-कुण्ड में हवन की भावना करता जाय । बाह्य पूजन में प्रति 'स्वाहा' पर हवन - कुण्ड में आहुतियाँ देता जाय ।

(१४)
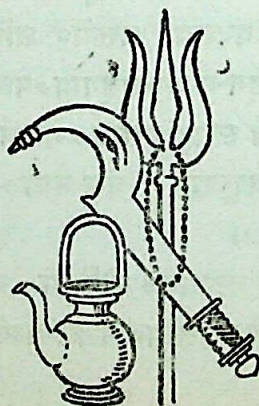
मिथुन-तर्पणान्त-माला

चतुर्दशी
शुक्ल-पक्ष

द्वितीया
कृष्ण-पक्ष

सङ्कल्प—ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि - युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक - मासे अमुक - पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक - गोत्रोत्पन्नोऽमुक - नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणा-न्त-माला-मन्त्रस्य प्रकृति-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्णवात्मक-मध्याह्नादित्य ऋषिः। अति - धृतिच्छन्दः। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। नित्यानन्द-सिद्धौ जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—प्रकृति-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्णवात्मने मध्याह्नादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-धृतिच्छन्दसे

नमः मुखे। श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। नित्यानन्द-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाऽभय-दान-हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ।

माला-पारायण

पहले माला की वन्दना करे । यथा—

अलौकिकं लौकिकं चेत्यानन्द - द्वितयं सदा ।
सुलभं परमेशानि ! त्वत् - पादौ भजतां नृणाम् ।।

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' और अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ ले । यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरं तर्पयामि ।।

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणीं तर्पयामि दिव्यौघ-गुरून् तर्पयामि० प्रकाशानन्दनाथ-मयीं० प्रकाशानन्द-नाथं० परमेशानन्द-नाथ-मयीं० परमेशानन्द-नाथं० पर - शिवानन्द-नाथ-मयीं० पर-शिवानन्द-नाथं० कामेश्वरानन्द-नाथ-मयीं० कामेश्वरानन्द - नाथं० मोक्षानन्द - नाथ-मयीं० मोक्षानन्द-नाथं० कामानन्द-नाथ-मयीं० कामानन्द-नाथं तर्पयाम्यमृतानंदनाथ-मयीं तर्पयाम्यमृतानंद-नाथं०।। सिद्धौघ - गुरु-रूपिणीं० सिद्धौघ - गुरून् तर्पयामीशानानन्द - नाथ - मयीं तर्पयामीशानानन्दनाथं० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मयीं० तत्पुरुषानन्द-नाथं तर्पयाम्यघोरानन्द-नाथ-मयीं तर्पयाम्यघोरानन्द-नाथं० वाम-देवानन्द-नाथ-मयीं० वाम-देवानन्द-नाथं० सद्योजातानन्द-नाथ-मयीं० सद्योजातानन्द-नाथं० ।। मानवौघ-गुरु-रूपिणीं० मानवौघ-गुरून्० गगनानन्द-नाथ-मयीं० गगनानन्द-नाथं० विश्वानन्द-नाथ-मयीं० विश्वानन्द-नाथं० विमलानन्द-नाथ-मयीं० विमलानन्द-नाथं० मदनानन्द-नाथ-मयीं० मदनानन्द-नाथं तर्पयाम्यात्मानन्द-नाथ-मयीं तर्पयाम्यात्मनन्द-नाथं० प्रियानन्द-नाथ-मयीं प्रियानन्द-नाथं ।। गुरु-चतुष्टय-रूपिणीं० गुरु-चतुष्टयं० श्रीगुरु-अमुकानन्दनाथ-मयीं० श्रीगुरु-अमुका-

नन्द-नाथं० श्रीपरम-गुरु - अमुकानन्द - नाथ - मयीं० श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द - नाथं० श्रीपरात्पर - गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयीं० श्रीपरात्पर - गुरु - अमुकानन्द-नाथं० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मयीं० श्री-परमेष्ठि-गुरु-अमुका-नन्द-नाथं० ॥ रतिं० रति-मयं० प्रीतिं० प्रीति-मयं० मनोभवां० मनोभवा-मयं० ॥

हृदय-देवीं० हृदय-देवं० शिरः-देवीं० शिरः-देवं० शिखा-देवीं०शिखा-देवं० कवच-देवीं० कवच-देवं० नेत्र-देवीं० नेत्र-देवं तर्पयाम्यस्त्र-देवीं तर्पयाम्यस्त्र-देवं० ॥

मनोभव-मयीं० मनोभवं० मकर - ध्वज - मयीं० मकर-ध्वजं० कन्दर्प - मयीं० कन्दर्पं० मन्मथ-मयीं० मन्मथं० काम-देव-मयीं० काम - देवं० ॥

द्राविणीं० द्राविणं० क्षोभिणीं० क्षोभिणं तर्पया-म्याकर्षिणीं तर्पयाम्याकर्षिणं० वशीकरिणीं० वशीक-रिणं० सम्मोहिनीं० सम्मोहिनं० ॥

सुभगां० सुभगं० भगां० भगं० भग-सर्पिणीं भग-सर्पिणं० भग-मालां० भग-मालं तर्पयाम्यनङ्गां तर्पयाम्य-नङ्गं तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमां तर्पयाम्यनङ्ग - कुसुमं तर्प-याम्यनङ्ग-मेखलां तर्पयाम्यनङ्गमेखलं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनं० ॥

ब्राह्मीं० ब्रह्माणं० माहेश्वरीं० महेश्वरं० कौमारीं० कुमारं० वैष्णवीं० विष्णुं० वाराहीं० वराहं तर्पयामी-न्द्राणीं तर्पयामीन्द्रं० चामुण्डां० चामुण्डं० महा-लक्ष्मीं० महा-लक्ष्मी-मयं तर्पयाम्य— ॥

—सिताङ्ग-भैरव-मयीं तर्पयाम्यसिताङ्ग - भैरवं० रुरु-भैरव-मयीं० रुरु-भैरवं० चण्ड-भैरव-मयीं० चण्ड-भैरवं० क्रोध-भैरव-मयीं० क्रोध-भैरवं तर्पयाम्युन्मत्त-भैरव-मयीं तर्पयाम्युन्मत्त-भैरवं० कपालि-भैरव-मयीं० कपालि-भैरवं० भीषण - भैरव-मयीं० भीषण-भैरवं० संहार-भैरव-मयीं० संहार-भैरवं० ॥

काम-रूप-पीठ-मयीं० काम-रूप-पीठं० मलय-पीठ-मयीं० मलय-पीठं० कुल-नाग-पीठ-मयीं० कुल - नाग-पीठं० कुलान्त-पीठ-मयीं० कुलान्त-पीठं० चौहार-पीठ-मयीं० चौहार-पीठं० जालन्धर-पीठ-मयीं० जालन्धर-पीठं तर्पयाम्युड्डचान-पीठ-मयीं तर्पयाम्युड्डचान-पीठं० देवी-कोट-पीठ-मयीं० देवी-कोट-पीठं० ॥

हेतुक-मयीं० हेतुकं० त्रिपुरान्तक-मयीं० त्रिपुरा-न्तकं० वेताल-मयीं० वेतालं तर्पयाम्यग्नि-जिह्व-मयीं तर्पयाम्यग्नि - जिह्वं० कालान्तक- मयीं० कालान्तकं० कपाल-मयीं० कपालं तर्पयाम्येक-पाद-मयीं तर्पयाम्येक-

पादं० भीम - रूप - मयीं० भीम - रूपं० मलय-मयीं० मलयं० हाटकेश्वर-मयीं० हाटकेश्वरं तर्पयामी—।।

—न्द्र-मयीं तर्पयामीन्द्रं तर्पयाम्यग्नि-मयीं तर्पयाम्यग्नि० यम-मयीं० यमं० निऋति-मयीं० निऋतिं० वरुण-मयीं० वरुणं० वायु - मयीं० वायुं० कुबेर-मयीं० कुबेरं तर्पयामीशान-मयीं तर्पयामीशानं० ब्रह्मा-मयीं० ब्रह्माणं तर्पयाम्यनन्त-मयीं तर्पयाम्यनन्तं० ।।

वज्र-मयीं० वज्रं० शक्तिं० शक्ति-मयं० दण्ड-मयीं० दण्डं० खड्ग-मयीं० खड्गं० पाश-मयीं० पाशं तर्पयाम्यंकुश - मयीं तर्पयाम्यंकुशं० गदां० गदा-मयं० त्रिशूल-मयीं० त्रिशूलं० पद्म-मयीं० पद्मं० चक्र-मयीं० चक्रं० ।।

वटुक-मयीं० वटुकं० योगिनीं० योगिनी-मयं० क्षेत्रपाल-मयीं० क्षेत्रपालं० गणेश-मयीं० गणेशं० वसु-मयीं० वसुं० सूर्य-मयीं० सूर्यं० शिव-मयीं० शिवं० भूत-मयीं० भूतं० ।।

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दर !
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ❀

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥
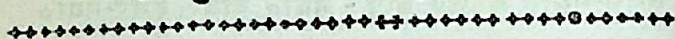
❀ यह 'तर्पणान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'तर्पयामि' है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति कुल-कुण्डलिनी के मुख में तर्पण की भावना मन में करता जाय। बाह्य पूजन में प्रति 'तर्पयामि' पर जिह्वाग्र-स्थित कुल-कुण्डलिनी को तर्पण कराता जाय।

मिथुन-जयान्त-माला

पूर्णिमा प्रतिपदा
शुक्ल-पक्ष कृष्ण-पक्ष

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे जम्बु-द्वीपे भरत - खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-नाम-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽमुक-नाम-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) श्रीबाला - त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशक्ति - शिव-मिथुन-जयान्त-माला-मन्त्रस्य पुरुष-तत्वाधिष्ठायि-शिवात्मक-सायमादित्य ऋषिः । कृतिच्छन्दः । श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । क्लीं शक्तिः । सौः कीलकं । भोग-मोक्ष-सिद्धौ जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—पुरुष-तत्वाधिष्ठायि शिवात्मक-साय-मादित्य-ऋषये नमः शिरसि । कृतिच्छन्दसे नमः मुखे श्रीकामेश्वर-शिव - सहितायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-

देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। भोग-मोक्ष-सिद्धौ जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान—रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाऽभय-दान-हस्ताम्,
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

मानस पूजा—

१ 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वर - शिव-सहिता - श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः विलेपयामि'—अधो - मुख कनिष्ठांगुष्ठ से;

२ 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'-अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से;

३ 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः घ्रापयामि'—ऊर्ध्व-मुख तर्जन्यंगुष्ठ से;

४ 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी - पादुकाभ्यां नमः दर्शयामि'—ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ से;

५ 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - श्रीपादुकाभ्यां नमः निवेदयामि'—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से;

६ 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिता-श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीपादुकाभ्यां नमः समर्पयामि'—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से।

माला-पारायण

पहले 'माला' की वन्दना करे। यथा—

या भोग-दायिनी देवी जीवन्मुक्ति-प्रदा न सा।
मोक्षदा तु न भोगाय श्रीबाला तूभय-प्रदा ॥

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ऐं क्लीं सौः ॐ नमः' ओर अन्त में 'जय जय' जोड़कर जप करना चाहिये। यथा—

ऐं क्लीं सौः ॐ नमः श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरि जय जय श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर जय जय ॥

दिव्यौघ-गुरु-रूपिणि जय जय दिव्यौघ-गुरवः जय जय प्रकाशानन्द-नाथ - मयि० प्रकाशानन्द - नाथ० परमेशानन्द - नाथ - मयि० परमेशानन्द - नाथ० पर-शिवानन्द - नाथ - मयि० पर - शिवानन्द - नाथ० कामेश्वरानन्द - नाथ - मयि० कामेश्वरानन्द - नाथ० मोक्षानन्द-नाथ-मयि० मोक्षानन्द - नाथ० कामानन्द-नाथ-मयि० कामानन्द-नाथ जय जयामृतानन्द-नाथ-मयि जय जयामृतानन्द - नाथ० ।। सिद्धौघ - गुरु-रूपिणि० सिद्धौघ-गुरवः जय जयेशानानन्द-नाथ-मयि जय जयेशानानन्द - नाथ० तत्पुरुषानन्द-नाथ-मयि० तत्पुरुषानन्द - नाथ जय जयाघोरा - नन्द - नाथ-मयि जय जयाघोरानन्द-नाथ० वाम - देवानन्द-नाथ-मयि० वाम - देवानन्द-नाथ० सद्योजातानन्द - नाथ-मयि० सद्योजातानन्द-नाथ० ।। मानवौघ-गुरु-रूपिणि० मानवौघ - गुरवः० गगनानन्द - नाथ-मयि० गगनानन्द-नाथ० विश्वानन्द - नाथ - मयि० विश्वानन्द-नाथ० विमलानन्द-नाथ - मयि० विमलानन्द-नाथ० मदनानन्द-नाथ-मयि० मदनानन्द-नाथ जय जयाऽऽत्मानन्द-नाथ-मयि० जय जयाऽऽत्मानन्द-नाथ० प्रियानन्द-नाथ-मयि० प्रियानन्द - नाथ० ।। गुरु-चतुष्टय - रूपिणि०

गुरु - चतुष्टय० श्रीगुरु - अमुकानन्द - नाथ-मयि० श्रीगुरु - अमुकानन्द-नाथ० श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि० श्रीपरम - गुरु-अमुकानन्द-नाथ० श्रीपरात्पर-गुरु-अमुकानन्द-नाथ - मयि० श्रीपरात्पर - गुरु-अमुकानन्द - नाथ० श्रीपरमेष्ठि-गुरु-अमुकानन्द-नाथ-मयि० श्रीपरमेष्ठि - गुरु - अमुकानन्द - नाथ० रते० रति - मय० प्रीते० प्रीति - मय० मनोभवे० मनो-भवा-मय० ॥

हृदय-देवि० हृदय-देव० शिरः - देवि० शिरः-देव० शिखा - देवि० शिखा - देव० कवच - देवि० कवच-देव० नेत्र-देवि० नेत्र-देव जय जयास्त्र-देवि जय जयास्त्र-देव० ॥

मनो-भव-मयि० मनोभव० मकर-ध्वज - मयि० मकर-ध्वज० कन्दर्प-मयि० कन्दर्प० मन्मथ-मयि० मन्मथ० काम-देव-मयि० काम-देव० ॥

द्राविणि० द्राविन्० क्षोभिणि क्षोभिन्० जय जयाकर्षिणि जय जयाकर्षिन्० वशी-करिणि० वशी-करिन्० सम्मोहिनि० सम्मोहिन्० ॥

सुभगे० सुभग० भगे० भग० भग-सर्पिणि० भग - सर्पिन्० भग - माले० भग - माल

जय जयानङ्गे जय जयानङ्ग जय जयानङ्ग - कुसुमे जय जयानङ्ग-कुसुम जय जयानङ्ग-मेखले जय जयानङ्ग-मेखल जय जयानङ्ग-मदने जय जयाऽनङ्ग-मदन० ॥

ब्राह्मि० ब्रह्मन्० माहेश्वरि० महेश्वर० कौमारि० कुमार० वैष्णवि० विष्णो० वाराहि० वराह जय जयेन्द्राणि० जय जयेन्द्र० चामुण्डे० चामुण्ड० महा-लक्ष्मि० महा-लक्ष्मी-मय जय जया—॥

—सिताङ्ग-भैरव-मयि० जय जयासिताङ्ग-भैरव० रुरु-भैरव-मयि० रुरु-भैरव० चण्ड-भैरव-मयि० चण्ड-भैरव० क्रोध - भैरव-मयि० क्रोध - भैरव० जय जयोन्मत्त-भैरव-मयि० जय जयोन्मत्त-भैरव० कपालि-भैरव-मयि० कपालि-भैरव० भीषण-भैरव - मयि० भीषण-भैरव० संहार-भैरव-मयि० संहार-भैरव० ॥

काम-रूप-पीठ - मयि० काम - रूप-पीठ० मलय-पीठ-मयि० मलय-पीठ० कुल-नाग - पीठ-मयि० कुल-नाग - पीठ० कुलान्त-पीठ - मयि० कुलान्त - पीठ० चौहार - पीठ० - मयि० चौहार-पीठ० जालन्धर-पीठ-मयि० जालन्धर - पीठ जय जयोड्डयान - पीठ-मयि जय जयोड्डयान-पीठ० ॥

देवी-कोट-पीठ-मयि० देवी-कोट-पीठ० ।।

हेतुक-मयि० हेतुक० त्रिपुरान्तक-मयि० त्रिपुरा-न्तक० वेताल-मयि० वेताल जय जयाग्नि-जिह्व-मयि जय जयाग्नि - जिह्व० कालान्तक-मयि० कालान्तक० कपाल-मयि० कपाल जय जयेक-पाद-मयि जय जयेक-पाद० भीम - रूप - मयि० भीम - रूप० मलय-मयि० मलय० हाटकेश्वर-मयि० हाटकेश्वर जय जये—।।

—न्द्र-मयि जय जयेन्द्र जय जयाग्नि-मयि जय जयाग्ने० यम-मयि० यम० निऋति-मयि० निऋते० वरुण-मयि० वरुण० वायु - मयि० वायो० कुबेर-मयि० कुबेर जय जयेशान-मयि जय जयेशान० ब्रह्मा-मयि० ब्रह्मन् जय जयानन्त-मयि जय जयानन्त० ।।

वज्र-मयि० वज्र० शक्ते० शक्ति - मय० दण्ड-मयि० दण्ड० खड्ग-मयि० खड्ग० पाश-मयि० पाश जय जयांकुश - मयि जय जयांकुश० गदे० गदा-मय० त्रिशूल-मयि० त्रिशूल० पद्म-मयि० पद्म० चक्र - मयि० चक्र० ।।

वटुक - मयि० वटुक० योगिनि० योगिनी-मय० क्षेत्रपाल-मयि० क्षेत्रपाल० गणेश-मयि० गणेश० वसु-

मयि० वसो० सूर्य-मयि० सूर्य० शिव-मयि० शिव० भूत-मयि० भूत० ॥

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरि श्रीबाला-त्रिपुर - सुन्दर ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॥ ❀

इस प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा—

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि ॥
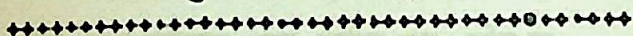
❀ यह 'जयान्त-माला' है। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'जय जय' है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति नमस्कार की भावना मन में करता जाय। वाह्य पूजन में प्रति 'जय जय' पर पुष्पाञ्जलि देता जाय।

१ मालाओं के वास्तविक ध्यान

प्रस्तुत खड्ग-माला-विधान के अन्तर्गत शक्ति - माला, शिव-माला और मिथुन-माला--इन तीन मालाओं के पाँच-पाँच रूप दिए गए हैं। इस प्रकार कुल पन्द्रह मालाओं का जप दोनों पक्षों में अनुलोम-विलाम से किया जाता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन मालाओं में से प्रत्येक माला के जो ध्यान यथा-स्थान दिए गए हैं, उनसे उस माला से मिलनेवाली सिद्धि का ज्ञान होता है। यथा—

पहली माला से 'खड्ग-सिद्धि', दूसरी माला से 'पादुका-सिद्धि', तीसरी माला से 'अञ्जन-सिद्धि', चौथी माला से 'बिल-सिद्धि', पाँचवीं माला से 'वाक्-सिद्धि', छठो माला से 'देह-शुद्धि' सातवीं माला से 'लोह-सिद्धि', आठवीं माला से 'अणिमादि-सिद्धि', नवीं माला से 'सर्व-वश्य-सिद्धि', दसवीं माला से 'सर्वा-कर्षण-सिद्धि', ग्यारहवीं माला से 'सर्व-सम्मोहन-सिद्धि', बारहवीं माला से 'सर्व-स्तम्भन-सिद्धि', तेरहवीं माला से 'धर्मार्थ-काम-मोक्ष सिद्धि', चौदहवीं माला से 'नित्यानन्द - सिद्धि' और पन्द्रहवीं माला से 'भोग-मोक्ष-सिद्धि' की प्राप्ति होती है।

स्पष्ट है कि उक्त ध्यान वास्तव में 'ध्यान' के महत्व के संसूचक हैं। वास्तविक ध्यान-श्लोक तीन मालाओं के लिये निम्न प्रकार हैं। यथा—

शक्ति-मालाओं का ध्यान

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्यां,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैर्विस्फुरन्तीं।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार-हारोज्ज्वलाङ्गीं
ध्यायेदम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणां ॥

शिव-मालाओं का ध्यान

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णया ।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च संरक्तं श्रीशिवं भजे ।।

मिथुन-मालाओं का ध्यान—

कुलाकुलग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक-रस्यतः,
नित्य-निष्पन्द-संरम्भ - निर्भरानन्द-चिद्-घने ।
महा-विन्दुमहः-पीठे नव्य-दिव्य - रसोज्ज्वलं,
शिव-शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे ।।

अतः यह उचित होगा कि शक्ति, शिव और मिथुन पाँच-पाँच मालाओं के जो ध्यान पुस्तक में दिए गए हैं, उन ध्यानों के पूर्व उक्त ध्यानों को जोड़ लिया जाय। इसका संकेत 'शुद्धि-पत्र' में भी प्रारम्भ में हो कर दिया गया है।

२ माला-जप के पूर्व श्रीगुरु की वन्दना

प्रत्येक माला-जप के पूर्व, इष्ट-देवता के मानस पूजन के बाद निम्न प्रकार गुरु-देव की वन्दना कर लेनी चाहिये।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

यदि समय हो और साधक की इच्छा हो, तो श्रीगुरु-वन्दना के अन्य श्लोकों का भी यहाँ पाठ कर सकते हैं।

२ पञ्च-दशात्मक खड्ग-माला की महिमा

सप्ताष्ट - माला-माहात्म्यं वक्तुं वर्ष-शतैरपि ।
न शक्यते वरारोहे ! पञ्चभिर्वदनैरपि ।। १

एक-वारं प्रति - दिनं दश-पञ्च - स्रजो जपेत् ।
महा-पातक - निर्मुक्तः सर्वं पुण्यवाप्नुयात् ।। २

सप्ताष्ट - मालामावर्त्य सप्ताष्ट - दिवसावधि ।
असाध्यामपि च वधूमाकर्षयति मोहिताम् ।। ३

मासमेकं समावर्त्य सप्ताष्ट - स्रजमुत्तमम् ।
असाध्य - याप्य - साध्याख्यैर्मुच्यते विविधैर्गदैः ।। ४

सप्ताष्ट - मालिका-जापो नित्यं पुण्य-मयाकृतिः ।
ज्वलन्नग्निरिव त्रस्तैर्वीक्ष्यते भूत - पूतनैः ।। ५

पूजा - होमस्तर्पणं च मन्त्र - शक्ति - प्रभावतः ।
पुष्पाज्य - तोयाभावेऽपि जप-मात्रेण सिद्ध्यति ।। ६

सप्ताष्ट - माला - जपनं प्रत्यहं कर्तुमक्षमः ।
प्रकृति शुद्ध-शक्त्याख्यां त्रि-सन्ध्यं परि-कीर्तयेत् ।
सर्व-माला-जपोत्थं यत् फलं तत् पुरुषोऽश्नुते ।। ७

माला - मन्त्रैरमीभिस्तु मन्त्रिता भूति - पांसवः ।
क्षिप्ता भूताभि-भूतानां मूर्ध्नि भूत-विनाशकाः ।। ८

ज्वरिणां च ज्वरा यान्ति वाता वातकिनामपि ।
असाध्य-रोग-ग्रस्तानां रोगा यान्ति द्रुतं क्षयम् ।। ९

एतन्मन्त्रित - तोयेन भस्मना वा समत्क्षणात् ।
पठित्वा हस्त-स्पर्शाद् वा नात्र कार्या विचारणा ।।१०

सप्ताष्ट - माला-मन्त्रैस्तु मन्त्रयित्वा घटोदकम् ।
सप्ताहं सेवनं कृत्वा वन्ध्या पुत्र - वती भवेत् ॥११

उक्त महिमा-परक श्लोकों में से अधिकांश का भावार्थ प्राक्कथन में दिया गया है। सातवें श्लोक के अनुसार जो १५ मालाओं का जप न कर पाये, वह मात्र शुद्ध शक्ति-माला का ही यदि तीनों सन्ध्याओं में प्रतिदिन पारायण कर ले, तो उसे सभी मालाओं के जप का फल मिल जाता है।

इस 'खड्ग-माला' के एक-एक अक्षर का महत्व है और इसके एक-एक मन्त्र की अपनी महिमा है। यथा—

य एता वर्णशोऽधीते सोऽधीते निखिला श्रुतिः ।
सर्वाः श्रुतीः पुराणानि तन्त्राणि सकलान्यपि ॥
श्रीविद्योपासको माला-मन्त्रानेतान् न वेत्ति यः ।
न तस्य फलदोपासा भस्मनीव हुताहुतिः ॥

अर्थात् जो इस 'माला' के एक-एक अक्षर का मनन करता है, उसे सभी श्रुतियों, पुराणों और तन्त्रों का ज्ञान हो जाता है। श्रीविद्या का जो उपासक इस माला के मन्त्रों को नहीं जानता, उसकी उपासना उसी प्रकार फल नहीं देती, जिस प्रकार भस्म में आहुति देना निष्फल होता है।

इसीलिए आदि-गुरु भगवान् शङ्कर का स्पष्ट निर्देश है कि—

तस्मादवश्यं विज्ञेया एताः पञ्च-दश-स्रजः ।
अप्रकाश्या अपि शिवे ! त्वत्-प्रीत्यैव मयोदिताः ॥

अर्थात् इन पन्द्रह मालाओं को अवश्य हीजानना चाहिये। इन्हें प्रकट नहीं करना चाहिये किन्तु हे शिवे ! तुम्हारे प्रेम-वश मैंने इनका वर्णन किया है।

पुस्तक-शोधन

जिस 'पुस्तक' के आधार पर साधक पूजा-पाठ करते हैं, उसका अपना महत्व है। यहाँ तक कि शास्त्रों में ऐसी 'पुस्तक' को साक्षात् देवता-स्वरूप मानकर उसकी नित्य पूजा करने तक का निर्देश मिलता है। अतः जैसे 'पूजा' के उपयोग में आने-वाली सभी वस्तुओं और प्राणियों के शोधन का अनिवार्य आव-श्यकता है, उसी प्रकार प्रयोग में आनेवाली 'पुस्तक' का भी शोधन कर लेना परमावश्यक है। 'शोधन' की इस क्रिया में सबसे पहले छपी पुस्तक में जहाँ-जहाँ 'अक्षर' या 'मात्रायें' ठीक न उठी हों, उन्हें यथा-स्थान अपनी लेखनी द्वारा सुधार कर लेना चाहिए। साथ ही जहाँ कोई शब्द शुद्ध न छपा हो, उसे शुद्ध रूप में वहाँ लिख लेना चाहिए। इस कार्य को यदि स्वयं न कर सके, तो किन्हीं विद्वान् साधक से करा लेना चाहिये।

उदाहरण के लिए प्रस्तुत पुस्तक में देखें छपाई की त्रुटियाँ—

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१-६	चरण	चरणे
५-१०	पोठ	पीठ
७-६	नाय	नाम
१४-११	रक्ताम्बरा	रक्ताम्बरां

ये सामान्य अशुद्धियों के उदाहरण हैं। इस प्रकार की छपाई की अशुद्धियों को ठीक कर ले। पृष्ठ ७३ पर ८वीं पंक्ति में 'पूजयाम्युड्डयान-पीठाय०' के बाद निम्न शब्द छूट गए हैं—

देवीकोट-पीठ-मय्यै देवीकोट-पीठाय०

इन्हें वहाँ लिख लें। इसी प्रकार पृष्ठ ८० पर अन्तिम पंक्ति में 'स्वाहोड्डयान-पीठाय०' के आगे जोड़ें—

देवीकोट-पीठ-मय्यै० देवीकोट-पीठाय०

पृष्ठ ६६ पर भी 'जयोड्डयान-पीठं' के बाद के उक्त नाम छूट गये थे किन्तु उन्हें पृष्ठ ६७ पर दे दिया गया है।

आशा है कि इस प्रकार पुस्तक का शोधन कर ही उपासक बन्धु इसे प्रयोग में लाने की कृपा करेंगे।
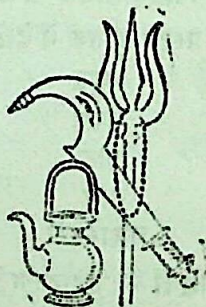
प्रामाणिक तान्त्रिक साधना-क्रम
हेतु
उपयोगी प्रकाशन

१ श्री बाला नित्यार्चन	१[illegible]
२ श्री बाला स्तव मञ्जरी	५-[illegible]
३ दश महाविद्या स्तोत्र संग्रह, भाग ३ (श्री श्री विद्या स्तव मञ्जरी)	२५-[illegible]
४ मुमुक्षुमार्ग (रहस्योद्घाटन)	१०-००
५ वाममार्ग	१२-००
६ साधना-रहस्य	२५-००
७ सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	१०-००
८ चक्र-पूजा के स्तोत्र	४-००
९ भैरवी-चक्र-पूजन	२-००
१० पूजा-रहस्य (ज्ञान खण्ड)	१५-००